चतुर्थ अध्याय

'इदन्नमम' उपन्यास की विशेषताएँ

चतुर्थ अध्याय
इदन्नमम की विशेषताएँ

4.1 आरंभ :-

मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' (1994) में बुंदेलखंड के ओरछा पहाड़ी भूभाग को कथावस्तू का केन्द्र बनाकर एक आँचलिक कृती का निर्माण किया है। उपन्यास की प्रमुखपात्र मंदा के जीवन की दु:खद कहानी सोनपुरा से शुरु होकर श्यामली तक और श्यामली से लेकर सोनपुरा तक उसका जीवन प्रवास बुंदेलखंड के आँचलिक परिवेश को प्रस्तुत करता है। यह उपन्यास नारी पात्र 'बऊ' (मंदा की दादी), माँ 'प्रेम' (मंदा की माँ) और स्वयं मंदा इन तीन पीढियों का प्रतिनिधीत्व करनेवाली नारी जीवन की व्यथा के साथ-साथ बुंदेलखंड के बदलते ग्रामीण जीवन, सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक बदलाव को प्रस्तुत करता है।

'इदन्नमम' में लेखिका ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बदलते आँचलिक परिवेश को प्रस्तुत किया है। सोनपुरा गाँव मे घटित राजनीतिक हादसे में नायिका मंदा के पिताजी महेंदर (बऊ का लडका) की हत्या हो जाती है, माँ 'प्रेम' (रतनजीजा के साथ) भाग जाती हैं और बेटी की माँग कोर्ट के माध्यमसे करती हैं। बऊ (मंदा की दादी) अपने जीवन का अंतीम सहारा और अपने खानदान की अंतिम निशानी के रुप में मंदा को अपने पास ही रखना चाहती है। बहू (प्रेम) से बचने के लिये वह 'श्यामली' गाँव के पंचमसिंह (दादाजी) की पनाह मे आ जाती है। 'श्यामली' गाँव मे पनाह पाई बऊ और मंदा के जीवन में आये उतार-चढाव के साथ-साथ 'श्यामली' गाँव के सांस्कृतिक-सामाजिक, राजनीतिक परिवेश के साथ-साथ बुंदेलखंड के प्राकृतिक अँचल मे लेखिका पाठक को घुमाकर लाती है। 'श्यामली' गाँव से अपने गाँव सोनपुरा लौटी बऊ और मंदा के जीवन के साथ-साथ नजदीके गाँव-अनगाँव के लोंगो कें जीवन चित्रण के माध्यम से बुंदेलखंड अँचल उभरकर सामने आने लागता है- 'श्यामली' गाँव में सरकारी अस्पताल के उद्घाटन के समय घटती राजनितिक हत्याकांड एवं मारपीट, बऊ का पंचमसिंह को शरण जाना, शरणागत के मदत के लिये पंचमसिंह का अपना जीवन लगाना, गाँवो पर हावी राजनीति, जातीय एवं साम्प्रदायिक भेदभाव, गांधी विचारों की हत्या करनेवाले गोविन्दसिंह, रतनसिंह, अभिलाख जैसे लोग

ग्रामीण जीवन खोखला करते जा रहे है, परिणामस्वरुप गाँव बिखर रहा है। टूटते हुए संयुक्त परिवार, जीवन में प्रवेश करती हुई हडपनीति, जातीय दंगे-फसाद, बिजली, रास्ते, अस्पताल तथा यातायात की सुविधाओं का अभाव, अन्याय और शोषण के खिलाफ जागृत होते हुए किसन मजदुरों की आवाज, अँचल पर फैला डाकुओं का आतंक, गाँव के सांस्कृतिक उत्सव-भंजरिया, रक्षा बंधन, दीपावली, होली जैसे तीज-त्योंहारों का महत्व और बदलता रुप, सरकार की नई-नई योजनाओं के आगमन से गावों का यांत्रिकीकरण होना परिणाम स्वरुप ग्रामीण जीवन की टूटन शीलता का दस्तावेज ही 'इदन्नमम' के रुप में प्रस्तुत होता है।

4.2) संक्रमणकालीन ग्रामीण जीवन और मानसिकता की अभिव्यक्ति :-

4.2. 1. आरंभ :-

देश की आजादी के बाद ग्रामीण स्तर पर कृषि अर्थव्यवस्था में एक युगांतकारी परिवर्तन हुआ है। ग्रामविकास हेतू सरकारने जमींदारी उन्मूलन, कृषि का यांत्रिकीकरण, पंचवार्षिक योजनाएँ, औद्योगिकरण, शिक्षा के प्रचार-प्रसार का कार्य अपने हातों मे ले लिया, जिसने स्वतंत्र भारत के ग्रामीण जीवन में काफी कुछ बदलाव आ गया। जैसे सामंतवाद की जगह पूँजीवाद, किसानों मे भूमीहीन मजदूर की संख्या बढने लगी, विस्थापित किसान, आदिम जन-जातीयाँ मजदूरी का शोषित जीवन जीने लगे। भारत के ग्रामीण जीवन के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक मूल्य के मानदंड ही बदल दिये। हर एक के पिछे स्वार्थ, संपत्ती को देखा जाने लगा और आजादी के बाद साठोत्तरी तक आते भारतीय समाज ने स्वतंत्रा का जो स्वप्न देखा था, वह टूटकर चकनाचूर हो गया। नये का आगमन और पुराने का लगाव इस संक्रमण काल ने भारतीय गावों की नीव हिला दी। संविधान ने तो समाजवाद स्विकार लिया, परंतु आज तक भारतीय समाज ने समानता के एक छोर को भी पकडा नही है।

स्वातंत्र्योत्तर युग में आधुनिक युग का आरंभ तो हुआ यहाँ आधुनिकता का अर्थ है- ''यांत्रिकता, बौध्दिकता और उपयोगितावादी दृष्टी। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आधुनिकता का प्रभाव आ रहा है। स्वयं अंग्रेजी शासन ने भारतीय समाज को नवीन परिवेश दिया। अंग्रेज अपने साथ नई औद्योगिकी, संस्थाएँ, ज्ञान, विज्ञान और मूल्य लेकर आये।''[1]

आधुनिकता के परिणाम स्वरुप भारतीय समाज संक्रमणमे से गुजरने लगा था और दुसरी तरफ भारत सरकाने विकास हेतु मिश्रित अर्थव्यवस्था का सुत्रपात किया। इनका उद्देश्य निजी क्षेत्रों में विकास को अवसर देते हुए उन पर सरकारी क्षेत्र का नियंत्रण रखना था। भारत की साझिदारी अर्थ पध्दती के कारण वर्तमान अर्थव्यवस्था में भयंकर असन्तुलन आ गया। भारत में नया पूँजिवादीता का जन्म हुआ। "आज जिन्होंने देश के औसत व्यक्ति की आशा-आकांशाओ को तोड मूल्यों को विघटित कर एवं नयी परिस्थितियों को जन्म दे, उसे नयी मानसिकता का द्वंद प्रदान किया है। इन द्वंदशील स्थितीयों से गाँव की अस्मिता बच नही सकी है। व्यक्ति प्रत्येक पद पर नये-नये प्रश्नों एवं समस्याओं की यातना सहता टूट रहा है।"[2] संक्रमण काल की इस अवस्था ने भारतीय समाजके जीवन मूल्यों में परिवर्तन आने लगा। विज्ञान, भौतिक सुविधा, शिक्षा और स्वतन्त्रता ने ग्रामीणों की मानसिकता को नयी चेतना प्रदान की है और यह विघटन क्रियाशील चेतना का परिणाम है। इन तनावपूर्ण स्थितियों नैराश्यो एवं अन्तर्विरोधों को स्वर देकर उनके बीच विकसीत नवीन मूल्यों का संधान स्वातन्योत्तर ग्राम्य जीवनपरक उद्दिष्ट रहा है। भारतीय समाज संक्रमण काल से झूझता आगे बढ रहा था और उसका प्रतिबिंब समकालीन भारतीय साहित्य मे चित्रित होने लगा। टूटते-बिखरते-जूडते समाज का चित्रण साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों का कथ्य रहा दिखाई देता है।

मैत्रीयी पुष्पाने भी 'इदन्नमम' मे भारत के बुंदेलखंड के ओरछा आँचल के संक्रमणकालीन ग्रामीण जीवन का बदलता रुप प्रस्तुत किया है। तीन पीढियों के विचार संघर्ष के साथ-साथ तीन पीढियों में समय के साथ बदलते सामाजिक मूल्यों का यथार्थ चित्रण 'इदन्नमम' का कथ्य है जिससे संक्रमणकालीन 'ओरछा आँचल' के टूटते-बिखरते मानवी जीवन का अंकन बऊ-प्रेम-मंदा इन तीन पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत होता है ।

4.2. 2. 'इदन्नमम' में मूल्य संक्रमण और सामाजिक जीवन :-

परिवर्तन विश्व का नियम है। समय के साथ मानव जीवन और मूल्य दोनों ही परिवर्तीत होते आ रहे है। वैज्ञानिक अविष्कार ने इस परिवर्तन की गति को तेज बनाया है।

---

1) डॉ. हेमंद्र कुमार पानेरी, 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास : मूलय संक्रमण,' संधी प्रकाशन, लालजी साण्ड का रस्ता, चौडा रस्ता, जयपुर - 302003, प्र.सं-1974, पृ-131

2) डॉ. शिवाजी सांगोळे, 'हिंन्दी कथा साहित्य में ग्रामीण चेतना' समता प्रकाशन-6, कानपुर (देहात)-209303, प्र.सं- 2006, पृ-37.

भारतीयों की अपनी संस्कृति के साथ-साथ जीवन और मूल्यों मे तेजी से बदलाव आ रहा है, जिसका चित्रण आँचलिक उपन्यासों में प्रतिबिंबीत होने लगा " स्वातंत्र्योत्तर युग में आँचलिक उपन्यासकार ग्राम्य जीवन में व्याप्त अलगाव की समस्या के प्रति सचेत हो गये हैं। व्यक्ति अपने निजी परिवेश में जिन कटुताओं को झेल रहा है। वस्तुतः संवेदनशील व्यक्ति ग्राम्य समाज में पैठ रहे अलगाव भाव को तीव्रता से अनुभव करना उसके मन में एक दर्द एक प्रश्नाकुलत्व भर देता है जिससे छुटकारा पाने का उपाय दृष्टिगोचर नहीं होता। आज ग्राम समाज भी उन सभी विचारधाराओं को उपेक्षा की दृष्टि से देख रहा है। जो न्याय और समूह के स्तर पर समाज को पुनः गठित करने के लिए उत्सुक है। वर्तमान समय में ग्रामीण जीवन नैतिकता को भूलकर स्वार्थमय हो चुका है। संगठन टूटते जा रहे और वैयक्तिक भाव बढ़ते जा रहे है।"[1] इस उपन्यास की पात्र बऊ श्यामली गाँव के गांधीवादी दादा 'पंचमसिंह' की पनाह पाती है। उनके पास अपने बेटे की हत्या का वर्णन करती है जो स्वार्थ का शिकार बना था-"अभिलाख यार दोस्त ही तो थे महेंदर के पर नहीं देखी गई महेंदर की बड़ी-बड़ा। देखते-देखते दुश्मन हो गए। विरोधी पाल्टी में जा मिले।"[2] यहाँ अभिलाख का नीजी स्वार्थ उभरकर सामने आ जाता है दोस्ती से बढकर राजनीतिक स्वार्थ व्यक्ति के अंदर मनुष्यत्व को समाप्त कर देता है, जिसके कारण महेंदर राजनितिक षड़यंत्र का शिकार बन जाता है।

आधुनिकता पश्चिम से तो आई लेकिन भारतीय समाज के परम्परागत सामजिक मूल्य, पारिवारिक दायित्व और प्रतिबध्दता को ठेस पहुँच गई। पारिवारिक मूल्य विघटित होने लगे जिसका परिचय 'इदन्नमम' में लेखिका ने बऊ और पंचमसिंह के टूटते हुए परिवार के माध्यम से करा दिया है। बऊ जो पुरानी पिढी का प्रतिनिधीत्व करती है, बेटे की हत्या के बाद पोती मंदा जो उसके खानदान की अंतिम निशानी है उसे जी-जान से संभालना चाहती थी, पर उसकी बहु (प्रेम) रतन यादव (बहनोई) के साथ भाग जाती है। और बेटी का हक्क माँगने के लिए केस दर्ज करती है। व्यक्तिस्वातंत्र की चाह मे प्रेम का भाग जाना

---

1) ममता शर्मा - 'रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्राम-चेतना (जल टूटता हुआ के संदर्भ में), आर.जी. प्रकाशन, पीपलोद बस स्टेण्ड के पास, डूमस रोड, सूरत, प्र.सं.- 2004, पृ.- 89.

2) मैत्रीयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण-2006, पृ-17.

परिवार को तोड़ देता है। जिससे बऊ को पंचमसिंह की पनाह लेनी पड़ती है। बऊ चीफ साहब को कहती है- "चीफ साहब तुम फिकीर जीन करो। लडने दो उस कंजरी को ..... जब तक इस काया में पिरान हैं लडेंगे हम भी। पूरी जिंदगानी हमने लडाई लडी है। हँसी-खेल नहीं हैं जिमिंदारीन बने रहना।"[1] पंचावार्षिक योजनाओं के नाम पर आजादी के बाद भारत के गाँव में विकास और निर्माण के बदरुप ही सामने आ गये "जमीनदारी उन्मूलन के बाद पूँजीवाद का निर्माण, किसान से भूमीहीन मजदूर बनना, गाँव मे सर्वत्र ऊब और उदासी, अन्याय-अत्याचार, शोषण ही नजर आने लगा। टूटती जमींदारी का उदाहरण बऊ थी, नये निर्माण होते पूँजिवादियों का रुप अभिलाख था, जो गाँव अन्याय, दरिद्रता बेकारी के पाटों मे पिसता चला जा रहा था। " परिछा में थर्मल प्लांट की योजना का शुरु हो जाना, बेतवा के किनारे बसे गाँव परीछा में सरिया, मौरम, गिट्टी, पत्थर आदि के ट्रक भर-भर के आने लगना, खेतों में से होकर सडके बनाई जाना, सडकों पर इंजिनों का घरघराने लगना, किसानवर्ग का यह देखकर छटपटाते रहना, उज्ज्वल योजना की यह चर्चा चिरंगाँव से लेकर ओरछा टीकमगढ़ तक पहुँचना उरई-जासौन से कौच-कोलपी तक पहुँचना इस विकास के कार्य को महाराज द्वारा संकटकाल कहना; महाराज के मतानुसार किसी के लिए विकास का महापर्व, पारीछा खुर्द, जाझौरा, खेडसर के लिए विनाश का महापर्व बनना, वहाँ के लोगों को अपनी भूमी से विस्थापित होना पडना, मुआवजें के रुप में कुछ न मिलना, विस्थापित होने वाले उखाडे जाने वाले लोगों की स्थिती के बारे में महाराज कहते है- "सरकारी ऐलान की डौड़ी पिटते ही गावों की नींद उड गई। मगज मारा गया। कुछ समझ में न आता कि जमीन का रकबा सौंपकर जो मुट्टी भर कागजों के नोट हाथ में आऐंगे, उनके द्वारा कैसे पेटों को पालना होगा, जीवन बसेंगे ? यहाँ से उखडकर।"[2] ग्रामीण सुधार योजनाओं तह सरकार ने कल-कारखाने, उद्योग तो शुरु किये परंतु इस परिवर्तन ने आम आदमी की जिंदगी में सैलाब खडा कर दिया बदलाव सें गाँव के गाँव पुरी तरह झकझोर गये, आम आदमी हताश हो बैठा-"राजकाज का मामला। कहें भी तो किससे? कौन सुनेगा गँवारु गुहार? सुन भी लेगा तो कान नही धरेगा, ध्यान में नही लायेगा। फिर भी सरकार के लेखे अधपगलो ने सरकारी मुलाजिमों को जा खटकाया। खटकाते रहे। विनती-प्रार्थना

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण-2006, पृ-77.

2) वही, पृ.188.

करके सुनाते रहे अपने दुखडे।"[1] टूटता-बिखरता जीवन, उजडते गाँव देखकर बुजुर्गों ने फिर एक बार क्रांती का नारा लगाया उनमें विश्वास था कन्धे से कन्धा मिलाकर जिस देश को अंग्रेजो के पारतंत्र्य से आजाद किया उसी अपनी भूमी, अपने गाँव के लिए फिर एक होकर पुनः क्रांती का नारा लगाया। 'इदन्नमम' में महाराज ने मंदा को दिया मंत्र क्रांती का महामंत्र था अपनी आशा-आकांक्षाओं को तिलांजली दी जा रही है यह देखकर महाराज का अधुरा काम मंदा अपने हाथ मे लेती है और फिर एक बार क्रांती का नारा बुलंद करती है- "सो जागो रे जागो। चेतो रे चेतो! छोटे-बडे, नन्हे-मुन्ने, बुढे-पुराने, नये जवानो के अलावा ढोर-चोपे, पेरवा-पंछी, नदी-ताल, पेड़-रुख, हवा-पानी यहाँ तक कि दसो दिशाओ को जगाना होगा। बचने-बचाने को जूझना होगा। अमीर-गरीब, शत्रु-मित्र सबको शामिल होना होगा इस यज्ञ मे। समय पडे तो समिधा-सामग्री भी बनना पडेगा। बात होम की है। बात आन्दोलन की है।"[2] इस तरह औद्योगिकरण के परिणाम स्वरूप भारत के गाँव आर्थिक संक्रमण से गुजरने लगा अपनी भूमी से उखड़ जाने के भय से लोगों में फिर एक बार क्रांती की ज्वाला भड़क उठती थी। यहाँ पर लेखिका ने मार्क्सवादी विचारों को प्रस्तुत करते हुए स्वतंत्रता के बाद भारत में समाजवाद का तो अवलंब किया गया लेकिन उसे तहतक पहुँचाना आवश्यक नही समझा। यहाँ के लोगों में फिर एक बार स्वतंत्रता की चिनगारी प्रज्वलीत होती दिखाई दे रही है - "मंदाकिनी ने सोना छोड़ दिया। आँखो में नींद की जगह क्रैशर मालिकों से सामना करने की युक्तियाँ करकराती, मन में संकल्प सरिया की तरह खड़ा हो जाता और इरादे पत्थर की शिलासे अडिग और अविचलित गडे रहते।"[3]

योजनाएँ राष्ट्र के विकास के बढ़ते चरण है, नेहरूजी ने कहा था - "लोगों को योजनाओं के राष्ट्रीय प्रयत्न में अपने आपको साझेदारी की भावना से विनियोग करना होगा।" इसी दृष्टि और उद्देश्य से योजनाओं की निर्मिती और क्रियान्वित आवश्यक है। भारत के किसानों ने भी विनियोग दिया परंतु, हिस्से आ गई मजदूरी, बेकारी और दरिद्रता, परिणामस्वरूप मार्क्स के विचारों को फिर एक बार चेतना मिली जिसके स्वर आज के उपन्यासों में सुनाई दे रहे है।

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण-2006, पृ-188.
2) वही पृ. 197
3) वही पृ. 197

मार्क्स का आर्थिक सिध्दान्त आंशिक रूप से मुक्त सिध्दान्त पर आधारित है। मार्क्स की दृष्टि में मूल्य वस्तुगत और अनुमानित है। यह मूल्य सामाजिक श्रमों को आधार बनाकर उत्पादन खर्च को ध्यान में रखकर निश्चित किया जाता है। पूँजी पूरी तरह से मानव श्रम है, जिसका उपयोग उत्पादन क्रिया में किया जाता है। तथा श्रमिकों को कम से कम परिश्रमिक देकर अधिक से अधिक उत्पादन कराया जाता है। श्रमिक किसी शारिरीक विरोध के पूँजीपतियों के लिए अतिरिक्त उत्पादन प्रदान कर उन्हें अधिकाधिक मुनाफा कमाने का अवसर प्रदान करते है क्योंकि वे साधनहीन और विवश होते है। पूँजी दीर्घकाल तक एकत्रित की जा सकती है, लेकिन श्रम तात्कालिक होता है, एकत्रित नही किया जा सकता । इस कारण श्रम बेचना पड़ता है।

मार्क्स ने तत्कालिन समाज में आर्थिक बँटवारे का अध्ययन कर अप्राकृतिक पक्षपात को मिटाने के लिए वर्ग हीन समाज व्यवस्था का नारा लगाया। उसका विचार था कि जिस प्रकार आवश्यक रूप से समाज में वर्गों का उद्‌भव हुआ, उसी प्रकार वर्तमान युग में उनका विनाश समाज कल्याण के लिये आवश्यक है। ''समाज में उत्पादन व्यवस्था जब समानता के आधार पर होगी तभी समाज में परिवर्तन होगा। भविष्य में न सिर्फ राज्य और वर्गों का लोप होगा, अपितु शारिरीक एवं मानसिक श्रम का भेद तथा देशविदेश की बीच की खाई भी पट जायेगी। संसदीय व्यवस्था का स्थान व्यवसायी श्रमिको के प्रतिनिधित्व ले लेंगे। पर इसके लिये समस्त सर्वहारा वर्ग को एकत्रित होना पडेगा। क्योंकि, संगठन खोने के लिए नही पाने के लिए बना है।''[1] ''इदन्नमम' महाराज जी कहते हैं, संगठन में शक्ति होती है। मिलकर चलेंगे फिरसे अपनी शेती धरेंगे।''[2] इस तरह भूमीहीन बने 'इदन्नमम' के किसानों को संगठन का महत्व बताते हुए मैत्रेयी पुष्पा ने मार्क्सवादी विचारधारा के प्रभाव से भारतीय संविधान ने स्विकार किये समाजवाद की याद पाठकों को करा दी है, साथ-साथ गांधीवाद का महत्व भी प्रस्तुत किया है, गांधीवादी विचारधारा के पात्र श्यामली के पंचमासिंह (दादाजी) के समयकाल में गांधीवादी विचारधारा से गांव में एकता है। ''चुनाव नहीं होने देते गांव में। कहते है, आजादी का जश्न हमने अपनी आँखो देखा है। भइया, इस

---

1) डॉ. शिवाजी सांगोळे 'हिन्दी कथा साहित्य में ग्रामीण चेतना', समता प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं.-2006, पृ. - 61.

2) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण-2006, पृ-198

आजादी को सँजोकर रखो, सँभाले रहो। गुलामी बड़ी पीडाओं, कठिनाइयों के बाद कट पायी है। निर्विरोध चुनाव के पक्ष में रहते हैं सदा।''[1] समय के अंतराल में गाँव की नई पीढी चुनाव लढ़ना चाहती है। गाँवों में धर्म के नाम पर आतंक मचाती है। 'श्यामली' गाँव जो एकता का प्रतिक था, राजनीतिक षढ़:यंत्र से नही बच पाता। अयोध्या के बाबरी मशीद की उध्वस्त कर देने की खबर हिंदू - मुस्लीम हत्याकांड को बुलावा देती हुई श्यामली जैसे एकता का प्रतिक बना गाँव भी उससे नहीं बचता। राजकीय संक्रमणकाल में व्यक्ति व्यष्टिचिंतन या समष्टिचिंतन के संघर्ष से गुजर रहा है।

आज के ग्राम्य जीवन की वास्तविकता से मैत्रेयी का परिचय बहुत निकट का रहा है। अपनी भूमी बुंदेलखण्ड के आंचल के सामाजिक सम्बन्धों, सांस्कृतिक मूल्यों और व्यवहार दर्शन को उन्होंने निड़रता से अपने साहित्य का विषय बना दिया है। आज समाज में, परिवार में, गाँवों में वैमनस्य बढ़ रहा है। समाज व्यष्टी-समष्टी बनता जा रहा है। 'इदन्नमम' का मिठु बदलते 'श्यामली' गांव के बदलते हालात को बऊ को सुनाता है - ''गाँव दिन - दिन बदल रहा है बऊ। अब तो अलग-अलग पुरा और जुदा-जुदा पाल्टी। पिरधानी के लिए समझो की कटन-मरण हो रही। पहले निर्विरोध हो जाता था चुनाव। अब तो एक गली में एक भावी परिधान खड़ा देख ले। जिन मोंडन को जाँघिया बाँधने की तमीज नहीं वे भी पिरधानी के उम्मेदवार। पुराने लोगों में तो गिन-गिनकर खोट निकालते है।''[2] उपर्युक्त विवेचन राजनीती सम्बन्धी मूल्य-संक्रमण की स्थिती को स्पष्ट करता है।

सामाजिक परिवर्तन के साथ ही मानवीय विचारधारा में परिवर्तन आ गया और पारिवारिक जीवन, मानवीय नैतिक मूल्यों में भी परिवर्तन आ गया। व्यक्ति स्वतंत्रता का स्वर आलाप ने लगा। 'इदन्नमम' में मैत्रेयी पुष्पाने बऊ, प्रेम और मंदा इन तीन पीढ़ियों के माध्यम से पारिवारिक, नैतिक मूल्यों का संघर्ष चित्रीत किया है। परंपरावादी बऊ सामाजिक धारणाओं को लेकर आगे बढ़ना चाहती हुई, स्त्री चरित्रता को महत्व देती है। बऊ मंदा को माँ (प्रेम) के बारें में बताती है। ''ऐसी छिनार किसी की मतारी होगी ? जो बिटिया कों छोड़ के भागे जाय। खसम कर जाय।''[3] स्त्री सुचीता को महत्व देनीवाली बऊ एक तरफ,

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006, पृ-32
2) वही पृ.174
3) वही पृ. 35

तो अपने शरीर का हक्क माँगनेवाली प्रेम, कुसुमाभाभी एक तरफ जहाँ दो पीढ़ियों के नैतिक संक्रमणकाल का चित्रण स्पष्ट होता है। 'इदन्नमम' की कुसुमाभाभी कहती है, ''बिन्नू, हमें एक बात समझाओं अरथाओ कि ये रिस्ते - नाते, सम्बन्ध और मरजाद किसने बनाई ? किसने सिरजी है बंधनों की रीत ? जो नाम लेती हो उनने ? मनु-व्यास ने ? रिसियो-मुनियों ने ? देवताओं ने कि राच्छसों ने ?''[1] यहाँ नैतिक मूल्यों का संक्रमण दिखाई देता है। व्यक्ति स्वातंत्र्य के प्रति सजग हुई कुसुमा समाज ने बनाई परंपरा के विरुध्द आवाज उठाते हुये अपना हक माँगना चाहती है। ''स्वाधीन भारत के हिन्दी उपन्यासों में ''समाज साध्य और व्यक्ति साधन'' के स्थान पर नवीन जीवन-दृष्टि के परिपाश्र्व में विकसित ''व्यक्ति साध्य और समाज साधन'' की विचारधारा के मूल्य का उत्तरोत्तर निरुपण हुआ है। जहाँ कहीं व्यक्ति के लक्ष्य की पूर्ति में समाज बाधक बना हैं। वहाँ व्यक्ति ने समाज व्यवस्था के प्रति विद्रोह किया है। परम्परागत समाज-व्यवस्था के मूल्य व्यक्ति की नवीन जीवन दृष्टि में निरर्थक सिध्द होने लगे है। अतः अब व्यक्ति परम्परागत मूल्यों के स्थान पर नवीन मूल्यों को आत्मसात करने लगा है। इस नव मूल्य परिग्रहण की प्रक्रिया में व्यक्ति के लिए संघर्ष आवश्यक बन गया है। वस्तुतः यह व्यक्ति का समाज से संघर्ष नहीं वरन् मूल्यों का परम्परागत मूल्यों से संघर्ष है। इस मूल्य-संघर्ष में युगानुकूल नूतन मूल्य व्यक्ति का पूर्ण समर्थन पाकर अपना स्थान बनाते जा रहे है।''[2] मैत्रेयी पुष्पा ने बऊ, प्रेम, कुसुमाभाभी, मंदा आदी पात्रों के माध्यमसे पीढ़ियों का संघर्ष बताते हुए परम्पराओं के विरोध एवं मूल्यों के अवमूल्यन से नैतिकता की नयी स्थितियों के जन्म होने का चित्रण किया है। जिसमें व्यक्ति की स्वतंत्रता का स्थान, उसके विचारों का स्वातंत्र्य, जीवन में नये मूल्य बनकर संक्रमणकाल से जन्म लेता हर एक युग का समाज मन साहित्य के माध्यम से चित्रित व्यक्ति स्वातंत्र्य, विचारों के स्वातंत्र्य की माँग कर रहा है।

मानव समाज का 'परिवार' एक अविभाज्य अंग है। उसके विकास यात्रा की बुनियादी परम्परा की नींव है; क्योंकि व्यक्ति की अस्तित्व और उसके विकास का मार्ग परिवार (कुटुंब) से ही प्रारंभ होता है। आज ''स्वतन्त्रता परवर्ती भारतीय ग्रामीण जीवन में

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण-2006, पृ-83

2) डॉ. हेमेंद्रकुमार पानेरी, 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास : मूल्य संक्रमण', संघी प्रकाशन, जयपूर, प्र. सं. 1974. पृ. 147

इन पारिवारिक सम्बन्धों में एक परिवर्तन घर कर रहा है और संयुक्त परिवार अपने पारम्पारिक ढाँचे को तोड़कर छोटी-छोटी स्वतन्त्र पारिवारिक इकाईयों में बँट रहा है।''[1] बटते परिवार और व्यक्ति समष्टि के परिणाम स्वरूप पारिवारिक विवाद, संपत्ती के नाम पर होनेवाला विघटन आज के भारतीय समाज का चित्र है। 'इदन्नमम' का गोविंदसिंह इसका उदाहरण है। ''दादा, तुम्हें उस मोंडी से मकरन्द का ब्याह करना है सो ऐन खुसी से करो। पर इतेक समझे रहना कि जायदात तुम अकेले नहीं हड़प सकते। घर कें अंडी-बच्चों तक का हिस्सा होगा। हम पागिल-सिर्री नही हैं जो बैठ जायँ हाथ-पाँव झर के।''[2] यहाँ एक परिवार के भाई-भाई का एक-दूसरे से प्रेम, दया, आत्मीयता, विश्वास टूट रहा है। जिस परिवार का आत्मा विश्वास था वही आज टूट कर बिखर रहा है। ''उनकी एकता, संगठन, सामंजस्य और सहयोग से परिवार सम्पन्न बनता है किन्तु सामाजिक परिवर्तन से आधुनिक काल में सम्पत्ति, स्वार्थ, महत्वकांक्षा, द्वेषभावना और ईर्ष्या के कारण भाई-भाई के पवित्र सम्बन्ध टूटने लगे है।''[3]

समाज और व्यक्ति के सांस्कृतिक, सामाजिक, औद्योगिक विकास के कारण आज के गाँव बदल रहे है। संक्रमणकाल से गुजरते भारतीय गाँव का चित्रण मैत्रेयी पुष्पाने 'इदन्नमम' में प्रस्तुत किया है - ''गाँव दिन-ब-दिन बदल रहा है बऊ ! अब तो अलग-अलग पुरा और जुदा-जुदा पाल्टी। पिरधानी के लिए समझो कि किटन-मरन हो रही है। पहले निरविरोध हो जाता था चुनाव। अब तो हर गली में एक भावी पिरधान खड़ा देख लो। जिन मोंडन को जाँघिया बांधने की तमींज नहीं; वे भी पिरधानी के उम्मेदवार ! पुराने लोगों में तो गिन-गिनकर खोट निकालते है।''[4] बदलते राजनीतिक मानदन्ड के बारे में डॉ. रमेश देशमुख ने लिखा है - ''देश में बहुमुखी राजनीति का पतन हुआ है, अपने नैतिकता के सभी मूल्य ध्वस्त कर दिए। अब जनता के सभी मसलें, चाहे वह रोटी के हों, चाहे धर्म के, वोट की नीति से तय होने लगे। सत्ता द्वारा भ्रष्ट्राचार और दुश्चरित्रता के संरक्षण एवं

---

1) डॉ. ज्ञानचंद्र गुप्त, 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास और ग्रामचेतना', अभिनव प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1974. पृ. 99

2) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ.132

3) डॉ. शिवाजी नाळे, 'रामदरश मिश्र की कहानियों में ग्रामीण जीवन', विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. 2004. पृ. 54

4) वही 2006. पृ.174

अपराध तथा राजनीति के गढ़ जोड़ ने जन जीवन में असहायता और असुरक्षा की भावना भर दी। वोट की राजनीति में संकीर्ण जातिवाद और गुटबंदी को भरपूर प्रश्रय दिया। परिणाम स्वरूप जनता का विश्वास सभी प्रकार की संवैधानिक रक्षात्मक इकाइयों से उठ गया।''[1] 'इदन्नमम' में लेखिकाने राजनीतिक संक्रमणकाल से गुजरते सोनपुरा गाँव का चित्रण किया है। जिसमें एक पीढी का प्रतिनिधी पात्र मंदा का पिता महेंदर राजनीति की शिकार बन जाता है, उसी गाँव के लोग, नई पीढी, वोट का महत्व समझकर जागृत होकर अपना हक माँगते दिखाई देती है - ''आप सोचते होंगे यहाँ के लोगों का रूख ऐंसा कैसे हुआ? ऐसा भाव क्यों अपना बैठे? सो भी हम आपको बताते है। असल में इस क्षेत्र के गाँव शहर-कस्बो से दूर पड़ते हैं। दूर ही नही बहुत दूर। सौदा-सुलफ की जरुरत तो गाँव से गाँव चीजे बदलकर पूरी कर लेते हैं, या कुछ दिन अपनी जरुरतों को काटकर भी गुजर कर लेते है। मन समझा लेते हैं कि जब गाड़ी - बैल का साधन मिलेगा तब हो आयेंगे एरच, एट, उरई।''[2] आजादी मिलने के बाद सरकार ने ग्रामसुधार के लिये अनेक योजनाएँ, प्रकल्प तो जरुर शुरू किये परंतु वह प्रकल्प पूँजीवादी लोगो के हाथ में चले गये और गाँव का इन्सान जिसने देश, भूमी के विकास के लिये अपनी जमीन दी थी वह किसान मजदूर बनकर रह गया। राजनीतिक लोग झूठे आश्वासन देकर खुर्सी हासिल करने पर गाँव की तरफ पीठ फेर देते है, उनका आगमन दुसरे चुनाव के समय ही हो जाता है। राजनीतिक चापलुसी से बड़े बने नेता, पुँजीवादीयों का ही विकास हो रहा है और गाँव की स्थिती वैसी की वैसी रहती है। गाँव का आदमी एक वक्त की रोटी के लिए मुहताज बनता है, उसे मजदूरी, श्रम के सिवाय उसके हिस्से कुछ नही आता है।

निष्कर्ष :

'इदन्नमम' में चित्रित सामाजिक, राजकीय, आर्थिक संकमणकाल को देखते हुए एक बात स्पष्ट हो जाती है, कि बदलाव को स्विकार करना और नये का निर्माण करने का संदेश यह उपन्यास देता है। 'इदन्नमम' मे चित्रित बुंदेलखण्ड का आंचल भी संक्रमणकाल सें गुजरते हुऐ अपना स्थान निर्माण करना चाहता है, समाजवादी, लोकतंत्र देश का हिस्सा बनने का उसका प्रयत्न ही भारतीय समाज, गाँव का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है। जिसमें

1) डॉ. रमेश देशमुख 'आठवें दशक की हिन्दी कहानी में जीवनमूल्य', विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. 1994, पृ.146

2) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ. 307

"विविध परिवर्तन ग्राम्य विकास के विविध निश्चय ही कहे जा सकते है कि योजनाबध्द एवं अन्य विकास कार्यों ने ग्राम्य जीवन में नई संघर्षशील स्थितियों को जन्म देकर नयी मानसिकता का संस्कार किया है।"[1] इन्ही सामाजिक क्रिया एवं प्रक्रियाओं के माध्यम से 'इदन्नमम' के बुंदेलखण्ड आँचल के नवनिर्माण को वाणी देना मैत्रेयी के सहित्य का उद्देश्य रहा है।

4.3) 'इदन्नमम' परिवेश का नायकत्व : आँचलकिता का सफल संयोजन :-

परिवेश चित्रण आँचलिक उपन्यास का आवश्यक तत्व है। सामाजिक उपन्यासों में भी परिवेश का अंकन होता है परंतु, आँचलिक उपन्यासों में 'अँचल' विशेष के परिवेश का चित्रण महत्वपूर्ण रहता है। आँचलिक उपन्यास में 'अँचल' वहाँ के जन-जीवन को बनाता - बिगाड़ता रहता है। परिणामस्वरूप; अँचल हि नायक बनकर वहाँ के जन-जीवन को पथदर्शन करता रहता है। संघर्षशील रहा समाज अपने अँचल विशेष को लेकर ही जीवन से उभरने का प्रयास करता है। "उपन्यास' में 'आँचलिक आभा' एक सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया है जो आँचलिक उपन्यास के पाठकों के मन पर एक उत्तम एवं समर्थ उपन्यास का पारायण करते समय, एवं उसके सम्पूर्ण कर लेने के तुरन्त बाद प्रतिफलित होती है। पाठक कोई 'उपन्यास' या मनगढ़न्त कहानी नहीं पढ़ रहा है। वरन् वह तो अपनी नस-नस में उस सनसनीदार हर्ष-विस्मय, कौतूहल, जिज्ञासा का भी अनुभव कर रहा है। जो मानो उसे किसी अद्भुत, अनजाने, अनुठे भूखण्ड पर सहसा, तीव्रतम गति से चलने वाले गुब्बारे की सहाय्यता से, जा उतरने पर होती है। वह अपने वास्तविक जगत या आस-पास के परिवेश से विलग होकर मानो सहसा किसी अज्ञात चमत्कारी शक्तिद्वारा, एक बिल्कुल ही अछूते, विलक्षण नूतन परिवेश में पदार्पण करता है, जो उसे एक विचित्र एवं अनिर्वचनीय अनुभूति प्रदान कराती है।"[2] आँचलिक उपन्यास के लेखक 'अँचल विशेष' को नायकत्व प्रदान कराते हुए उसका जीवन संघर्ष के लिए जुझना ही उसका प्रमुख गुण, शौर्य बन जाता है, जिसके शौर्य को देखकर पाठक अंचबित रह जाता है; और वह शौर्य की गाथा पुरी किए बिना वह रूकता नही है। उसपर परिवेश का नायकत्व हावी हो जाता है, पाठक का मन

1) डॉ. शिवाजी सांगोळे, 'हिन्दी कथा साहित्य में ग्रामीण चेतना' समता प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.2006. पृ.23
2) डॉ. इन्दिरा जोशी, 'हिन्दी आँचलिक उपन्यास उद्भव और विकास' देवनागर प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. 1985. पृ. 23.

'अँचल' का भ्रमण करते समय ही उस अँचल विशेष का ही एक पात्र बन जाता है। वहाँ के लोगों का जीवन संघर्ष उसे अपना लगता है, और मानों नायकत्व को प्रेरणा देकर ही वह उपन्यास पढ़ता रहता है। 'इदन्नमम' में भी मैत्रेयी पुष्पाजी ने 'बुंदेलखण्ड अँचल' का चित्रण प्रस्तुत किया है। नायक बनकर उभरा हुआ 'बुंदेलखण्ड अँचल' अपनी विशेषता के साथ सामने आकर वहाँ के मनुष्य को जीवन जीने की शक्ति प्रदान करता है।

आलोच्य यह उपन्यास मध्यप्रदेश के 'बुन्देलखण्ड' ओरछा प्रदेश से सम्बन्धित है जिला टीकमगढ़ मे आता है। उपन्यास का प्रारंभ 'श्यामली' गाँव से शुरू होता है - 'बेर की कँटीली झाडियों और गूलर के पेड़ो से अच्छादित गैल से निकलकर बैलगाड़ी सड़क पर आ लगी। सड़क-सड़क चलते ही लिपी दीवारों वाले घरौंदों की खपरैलें तथा बीच गाँव में बने पल्फे अटाओं की झीलमिलाती सफेदी दिखाई पड़ने लगी। छतों पर झुके पेड़ रुखों की हरियाली को देखकर बैलों को हाँकते हुए एक पक आयी उम्र के गनपत बोले, "लो बऊ, आ गया श्यामली गाँव।"[1] श्यामली गाँव का यह वर्णन प्राकृतिक पृष्ठभूमि का सुन्दर उदाहरण है जो भौगोलिक परिवेश की अवतारणा करता है। सोनपुरा की बऊ एकलौता बेटा मेंहदर की हत्या होने पर और बहू (प्रेम) के भाग जाने पर खानदान की अंतिम निशानी नातिन 'मंदा' को बचाने श्यामली गाँव के दादा पंचमसिंह की पनाह में आई है।

श्यामली गाँव भी अपनी विशेषता लेकर जी रहा है। दादा पंचमसिंह गाँव में अपने गांधीवादी विचार के कारण एकता के निर्माता है। "अब तो हम सही-सही ही देख रहे है। ढ़ड़कोले चमार है; जो हरमुनियाँ पर आड़ा-तिरछा होकर झुम रहा है। वो ही तो है। तनक गेरुआँ रंगत लिए निमोंछिया। बड़ी-बई ! जुलफे।"[2] "बेटा, हमारे ख्याल में चौंतरा पर गाँव - भर जुड़ा है। हर घर का एक - एक जन । श्यामलाल, अर्जुन, चतुर्भुज, मोदी, चीफसाब, पन्नी माते। लो इतनों को तो हमीं चिन्हते हैं। दइया! कोई देखले तो जात में से डार दे न इन्हे ! धन्न है रे दादा के राज ! श्यामली गाँव। गांधीयुग ले आयें हैं।"[3] गाँव कि एकता का प्रतिक 'श्यामली' गाँव है जो गांधवादी विचार के दादा पंचमसिंह के यहाँ सब इकट्ठा

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006, पृ. 9
2) वही, पृ.34
3) वही, पृ. 34.

होकर 'कीर्तन' सुनते है। जातिव्यवस्था से ग्रस्त भारतीय समाज में जातिभेद मिटाते रहना, गांधीविचार 'जाति निर्मूलन' (अछूतोध्दार) का द्योतक लेखिका ने दादा पंचमसिंह के माध्यम से प्रस्तुत किया है। ओरछा प्रदेश का वर्णन रामकिसन के कीर्तन में आ जाता है -

''विन्ध्य प्रदेश जिला टीकमगढ़

नगर ओरछा ग्राम,

कि जहाँ पर राजेऽऽसिरी भगवाऽन।''[1]

बुंदेलखण्ड के सीमाओं के चित्रण के साथ-साथ सामाजिक, धार्मिक, परिवेश का मार्मिक चित्रण भी 'इदन्नमम' में सफलता से हुआ है। ''बऊ जान गयी हैं, दादा सबसे बड़े हैं। वे बाहर का काम करते हैं। बिलाक, थाना, तहसील, जिला, शहर के सारे काम वैसे अफसर-अहलकारों से बातचीत करनी गाँव मे केवल तीन जनों को आती हैं- दादा, मोदी लल्ला और चीफ साब। नये लडके भी हैं, जो अँगरेजी बोल लेते हैं, मगर इनका गरम मिजाज नही जँचता दादा को, सो आगे नहीं आने देते उन्हें।''[2] स्वतंत्रा के बाद भारतीय गाँवों का सामाजिक स्थान बना रहा था बडे बुर्जुग गाँव की एकता, गाँव परिवार को संभालने का जीमा अपने उपर लेते थे और गाँव भी उनके हाँ मे हाँ मिलाकर एक सकीने से गाँव का कारोबार चलता था जो सामाजिक स्वास्थ को अच्छा उदारण श्यामली गाँव है।

'प्रेम' बहु के केस दायर करने पर दादा पंचमसिंह बहु के साथ मंदा को ''सुकुपुरा के मंदिर में भेजते है।''[3] वहाँ का प्राकृतिक चित्रण ओरछा प्रदेश के प्रकृति से परिचित करा देता है।-

''रोशनी पलाश, सेमल और कदम्ब के फूलों में भटक रही है। और भटक रही है मन्दाकिनी।

बबुल और सागौन की छतनार छाया में अँधेरा ही अँधेरा। चारों और कंटीली झाडियाँ।

मन्दाकिनी गढ़ी की कँगूरेदार छत पर खड़ी थरथरा रही है। आसपास फैले निर्जन एकान्त में जंगली पंछियों की कर्णभेदी चिचियाहट...... मनोरम गंध से भी भय लग रहा

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण-2006. पृ.34
2) वही पृ.30.
3) वही पृ.60.

है। कहीं करौंदी कुंज में कोई प्रेत तो नहीं बसता? बऊ कहती हैं, खसबोई पर रीझ जाते हैं, भूत-प्रेत। हवा के तेज झोंकों में कोई चुड़ैल उडा रही हो सुगंध।''[1]

''गणपत कक्का कहते है, ''तुंगारण्य के जटा-जूट और सातधारओं में बहती बेतवा यहीं पास में है।'' ओरछ प्रदेश के तुंगारण्य का वर्णन करते हुये प्राकृतिक संपदा से भरे इस अँचल का चित्रण सजीव बना हैं।

आलोच्य उपन्यास में नायिका मन्दा पंचमसिंह के पनाह में श्यामली तो रहती है पर, उसे लेकर परिवार में दरार पडने लगती है। इस दरार को सादने के लिये दादा पंचमसिंह पोते मकरंद से मंदा की सगाई कर देते है, जिसे मकरंद की माँ द्वारा ठुकराने पर बहु मंदा को लेकर सात बरस बाद अपने गाँव सोनपुरा लौटती है। लेखिका ने सोनपुरा गाँव का प्राकृतिक चित्रण इस प्रकार किया है-''हाँ, ठिक है, बिलकुल ठिक। जो शहर से दूर है, कड़वे-कसैले ही होंगे हम लोग, तभी तो हमारे गाँव तक आने का साधन केवल बैलगाड़ी ही बस रहता है। पूरे पच्चीस किलोमीटर तक सड़क नहीं। चिठ्ठी-पत्री का साधन नहीं। हफ्ते में दो दिन भी ड़ाकिया नही आता। आये भी कैसे, चलते-चलते साइकिल भी दगा दे जाती है कटीली झाड़ियों के बीच। अखबार कभी-कभार मिल जाय तो लगता नही कि अपने देश की बाबत पढ़ रहे हैं हम। अपने आस-पास तो ऐसा कुछ नहीं।''[2] आजादी के पचास साल बाद भी प्राथमिक सुविधाओं से वंचित 'सोनपुरा' गाँव की कहानी है-'इदन्नमम' जिसमें ओरछा अँचल का प्रतिनिधीत्व करते भूमीहीन बने मजदूरों के जीवन का संघर्ष। घटनाओं का मुख्य केंद्र 'सोनपुरा'है, परन्तु आवश्यकतानुसार ग्रामीण जीवन के संशीलष्ट यथार्थ को उभारने के लिए- श्यामली, पारिधाग्राम, खमाडिकौली, गोंती, नरसिंहगढ़, गोपालपुरा, उरई, कालपी, कोंच आदि पन्द्रह गावों का चित्रण भी प्रस्तुत होता है। जन-सामान्य की आर्थिक विषमता, पीड़ा, अभाव, संघर्ष को यथार्थवादी दृष्टी से मैत्रेयी ने चित्रित किया है।

आजादी के बाद देश की उन्नती के लिए विकास योजनाओं निर्माण किया गया और भूमिअधिकरण के तले गाँव के गाँव लिये गये जिससे वहाँ के लोगो को विस्थापित होना पडा। गाँव की भूमी को न छोडते हुये वहाँ का संघर्षशील मनुष्य जिसमे अपनी मिट्टी से प्यार होता है उसके जीवन की कहानी है। सात बरस बाद लौटी बऊ अपने गाँव सोनपुरा

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ. 56.
2) वही पृ. 232-233.

को हि चिन्ह नही पाती। "जे मसीने! धूरा-धंगड और जे चाय-पानी के खोका। पागिल न बनाओ हमें। जैसे हम अपने गाँव पहचानते नहीं। कोरियाना आधा कोस पहले से दीखने लगता है। और लो, अस्पताल तो आँधरों को भी दिखाई पर जाय।"[1] विकास योजनाओं ने गाँव का रंग रुप ही बदल दिया "भारतीय ग्रामीण जीवन को सबसे अधिक प्रभावित एवं प्रचलित करनेवाली, उनकी मानसिकता में उथल-पुथल करनेवाली घटना हमारी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता एवं तज्जनित विकास कार्य है।"[2]

स्वतंन्त्रता प्राप्ति के पश्चात देश के नवनिर्माण हेतू भौतिक बुनियादी नींव डाली गई, पंचवार्षिक योजानाएँ, सामुदायिक विकास योजनाएँ, सिंचाई परियोजनाएँ, भूमिसुधार, सघन खेती, सहकारिता, हरितक्रांती, कृषि का आधुनिकीकरण, लघु-बडें उदयोंगों की स्थापना की, परिणाम स्वरुप; वैज्ञानिक अविष्कारों के चलते औद्योगिक क्षेत्र में तीव्र गति से मशीनीकरण हुआ। यंत्र शक्ति ने मानव शक्ति का महत्व नगण्य कर दिया। परिणाम यह हुआ कि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ 'खेती' ध्वस्त होती गई। जमींनदारी उन्मुलन के तह पूँजीवाद ने जन्म लिया, तो दुसरी तरफ स्वावलम्बी किसान परावलम्बी मजदूर बनने की प्रक्रिया शुरु हुई।-"कौन सा किसाब करेंगे? दुकान खोलेंगे या खोमचा लगायेंगे? या कोई रेहड़ी? सब्जी-भाजी बेचेंगे या जूतों की मरम्मत, कि गोली-बिस्कुट की दुकान? पीढ़ियों से चली आ रहीं किसानी छोडकर कौन-सा व्यापार चुने? निभा भी पायेंगे या नही? कुछ सुझता न था। चतुर से चतुर बुध्दिमान किसान मतिभ्रम में पड गया।"[3] मैत्रेयी पुष्पा जी का बचपन भी बुंदेलखण्ड के 'खिल्ली' गाँव मे बीता-बचपन से अहिरों मे घर पली-बड़ी लेखिकाने किसान-जीवन नजदीक से देखा था। स्वतंत्रता के बाद ग्राम विकास हेतू आई परियोजनाओं नें ग्रामीण जीवन में काफी कुछ बदल गया। नये चुनौतियों ने जन्म दिया, गाँव-परिवार बिखरने लगे। ग्रामीण जीवन विषम बन गया, एक तरफ भूमीहीन किसान, मजदूर तो दूसरी तरफ पूँजीवादी, सहकार, सरकारी अफसर, कारखानो के मालिक इस तरह का चित्र सामने आने लगा।

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ.153.
2) डॉ. शिवाजी सांगोळे, 'हिंन्दी कथा साहित्य में ग्रामीण चेतना' समता प्रकाशन-६, कानपुर, प्र.सं., 2006. पृ.22.
3) वही पृ.188.

भारतीय किसानों की अभावों में तडपती जिंदगी और मजदूरों शोषितों की दबी हुई हुंकार को मैत्रेयी ने मंदा के माध्यम से वाणी दी है जिससे बुण्देलखण्ड के पहाड थर्रा रहे है। मंदा 'इदन्नमम' कहते हुये अपना सारा जीवन इस अँचल के सुधार के लिये लगाती है-

''ओ 3 म् भूर्भव: स्व: अग्नि ऋषि पवामान: पांचजन्य

पुरोहित्: तमीमहे महगयम् स्वाहा।

इदं अग्ने पवनाय इदन्नमम्।।''[1]

'यह मेरा नही।' जो कुछ मैं अर्पण कर रहा हूँ यह मेरा नही।'

जिस मिट्टी से यह शरिर बना है, उसी मिट्टी (भूमी) को बचाने के लिये मंदा अपना जीवन अर्पित करने की शपथ लेती है।

ओरछा प्रदेश मे बदलते ग्रामपरिवेश को उतारने का सफल और पूर्ण प्रयास उपन्यास में हुआ है। ''बेतवा के किनारे बसे पारीछा गाँव में सारिया, मुरम, गिट्टी और पत्थर ट्रक भर-भरकर आने लगे। खेतों में होकर सड़के बनाई जाने लगी और उन सड़को पर इंजनो का कर्ण भेदी कोलाहल घरघराने लगा। फसले ही नहीं, जैसे किसानों के कलजे रौंदे जाने लगे हो। छटपटाने लगा आसपास के गाँवोका किसानवर्ग।''[2]

''रब्बी की फसल कट चुकी। खलिहान क्रैशर के धूल धंगड से बचाकर गाँव की पूर्व दिशा में रखे जाते है। प्रधानजी के खलिहान के दाँय दिलवाकर बहु ने अपने तीन-चार बोरी गेहूँ निकलवा लिए। वे गेहूँ की ढोरी को निर्निमेष देखती रही,''किसी जमाने इतना तो हम कामवालों में बाँट दिया करते थे।''[3] कल-कारखानों, सिचाई योजना, के कारण खेत-खलिहान खत्म होकर किसान वर्ग मजदूर बनता चला गया। आजादी के बाद विकास योजनाओं के परिणाम गाँव के परिवेश में परिवर्तन हुआ, जहाँ सुबह हल लेकर खेत पर जानेवाला किसान मशीन-यंत्रो से घिर गया। ''मन्दाकिनी की दिनचर्या में अन्तर नहीं आया, यह कहो कि जीवनक्रम बदलने लगा है। क्रैशन पर ट्रैक्टर क्या लगाया रोज की ड्यूटी हो गयी है, वहाँ रोज सबेरे जाना। भराई-ढुलाई खर्पो का हिसाब लगाकर भइयाजी को देना होता है। छोटी गिट्टी, बड़ी गिट्टी और बजरी का अलग-अलग रेट, तो कभी सोलिंग की

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण,2006. पृ.191.
2) वही पृ. 191.
3) वही पृ. 188.

ढुलाई का हिसाब करना और ट्रैक्टर के डीजल, मोबिल ऑयल उर्जा-पुजी का प्रबंध करवाना। इसी सब में सुबह से शाम हो जाती हैं। दिन चिरइया की तरह फुर्र हो जात है।''[1]

जीवन सघर्ष के लिये कर्मरत रहने के लिये प्रेरणा देनेवाला 'सोनपुरा' गाँव का पहाड आस-पास के गाँव की कहानी सुनकर और ही प्रेरित हो उठता है। एकता का महत्व बतानेवाले ग्राम 'परिछा' के प्रधान टिकमसिंह बताते है-''धीरे-धीरे राजनीतिबाज, अफसरों तथा बिचौलियों के दाँव-पेच उनकी समझ में आ गये। पहचान गये हितू-मित्रों और शत्रुओं को। फिर क्या था, आव्हान किया अपने क्षेत्र के किसानों का। पुकारा एक-एक खेतिहर को, मजदूरों को और गाँव के बाशिन्दा पशुपालकों को। सब को एक सूत्र मे बाँधा। किसी भी लालच से खबरदार किया। किसी भी लाभ में न पड़ने की सौगन्ध धरायी, कौल दिलाये।''[2] यहाँ काल-बोध का वर्णन करते हुए परिवेश को नायकत्व प्रदान कराते हुए सोनपुरा का परिवेश जागृत होता पेश आता है। पहाड से लौटकर क्या आयी है, मन्दाकिनी अनेक सवाल बाँध लई है अपने छोर में। राऊतों की टपरियाँ -किसने नहीं देखी? गाँव के जन-बच्चा ने देखी हैं पहाड़ के आसपास बनी टपरियाँ। पहल-पहल तो लोग चौंके थे। उनके घरों को देखकर, जैसेवह चौंकी थी। ढाई फूट उँचाई की दिवारे, धान के पयाल से छबी और गोबर से लिपी ढलवाँ छतें। द्वार इतने सेंकरे कि आदमी लेट-बैठकर अन्दर प्रवेश कर पाये। यह पूछो कि इतनी नीची छत के नीचे क्यों है तुम्हारा वास तो मैले मुख से हँस देंगे। फिर बडे उल्लास से कहेंगे, ''हमारी घुमन्त जात घर बनाकर नही रहती। उँची छत से डर लगता है हमें, कहीं ऊपर गिर पड़े तो?'' चार-छः फटे चिथडे लटके रहते है सूखने के लिये अलेमोनियम के दो-चार फूटे-पिचके बर्तन रखे रहते है। बाहर बने रहे चुल्हे के पास।''[3] सोनपुरा के पहाड पर खदान में पत्थर तोडनेवाले मजदूरों की जिंदगी का वर्णन परिवर्तन से दूर है। इन विस्थापित मजदूरों का परिचय इतना ही था- ''परिचय-चिन्हार और जानकारी केवल इतनी भर थी कि ये क्रैशर पर लगे फुटकर मजदूर 'ललितपुर' जिले अन्दरुनी भागों से आये राऊत-छतरपुर आदि जिलों के हैं। ललितपुर ही क्यों, सागर, गुना, टीकमगढ़, छतरपुर आदि जिलो के वन प्रान्तों के बाशिंदा हैं ये लोग और यहाँ सोलिंग (मोटा पत्थर) तोडने का काम करते हैं। पहाड़ फोडकर रोटी कमाते है।''[4]

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ. 181.
2) वही पृ. 224.
3) वही पृ. 189.
४) वही पृ. 226.

मैत्रेयी पुष्पा ने आलोच्य उपन्यास में प्रारम्भ से लेकर अंत तक पहाडी आँचलिकता का सफल संयोजन किया है, जिसकी अपनी निजी स्थानिक विशिष्टताएँ तथा सामूहिक सुख-दु:ख है। जिन्हें त्यौहारो, उत्सवों में लेखिकाने प्रतिम्बिबित किया है। स्थानिक रंग आँचलिक उपन्यासो मे महत्वपूर्ण स्थान रखता है।-

सामान्यत: मध्य-प्रदेश और उत्तर प्रदेश के मिले-जुलै, एक विस्तृत भूखण्ड को विन्ध्येलखण्ड अर्थात बुन्देलखण्ड कहा जाता है। प्रसिद्ध कहावत है-

''भैंस बँधी है ओरछा, पड होशंगा बाद।

लग बैया है सागर, चपिया रेवा पार।''[1]

बुन्देलखंड का नदियों द्वारा किया सीमांकन भी कहावत में आया है,-

''यमुना उत्तर और नर्मदा दक्षिण अँचल।

पूर्व ओर हैं टोंस, पश्चिममांचल मे चम्बला''[2]

नदियों-पहाडों से घिरे इस प्रदेश अँचल के लोगों के नस-नस में धार्मिकता वास करती है, जो उपन्यास में पूजा-पाठ, तीज-त्योंहारों का चित्रण सहज बना है। ''तुलसीदास जैसे युगद्रष्टा और युग सृष्टा कवि की यह भूमी, तो व्याकरण जगत में धूम मचा देनेवाले केशवदास की भी देह इसी मीटीं मे पली है। इनके अतिरिक्त मनिराम, पद्माकर, भूषण और बिहारी जैसे कवि-कुल जन्म लेकर किया।''[3] ऐसे महान कवियों का प्रणयन इसी भूमी के जन-जन में ईश्वर भक्ती बास करती है, जिसने उन्हे एकता के धागे में पिरो दिया है। श्यामली गाँव के दादा पंचमसिंह के घर में ''मंगल के मंगल पर होता है उस पर किर्तन।''[4] जिसमें गाँव के अछूत लोग भी शामिल होते है।-''अब तो हम सही-सही देख रेह है। ढडकोले पर चमार है, जो हरमुनियाँ पर आडा-तिरछा होकर झुम रहा है। वो ही तो है। तनक गेहुओं रंगत लिए निर्मोलिया। बड़ी-बड़ी जुलफे। ऐन पहचान गये हम।

किर्तन चल रहा है-

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ. 227.

2) उषा भटनागर, 'वृन्दावनलाल शर्मा के उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन', ज्ञानप्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.,1992. पृ.18.

3) वही पृ. 18.

4) वही पृ. 19.

''मैं सुमिरों मिरी गणराज

मेरे कीरतन में विघन परै नाऽऽ।

मेरे किरतन में विघन परै नाऽऽ।। मैं सुनिरों ------।।''[1]

''बुन्देलखण्ड की वीर परम्परा में एक लोकोक्ति बहुत प्रसिद्ध है-

पै सदा रिफ को धी चपेटियाँ दीं।

इस खण्ड बुन्देल ने भूल के भी,

अपनी मगलों को न बेटियाँ दी।''[2] (श्री रामपोपाल पाण्डेय''शारद)

वस्तुतः बुन्देलखण्ड का स्वाभिमानी क्षेत्र सदैव ही अपराजेय रहा है। विन्ध्य की उँचाइयों से उँचा यहाँ का शौर्य रहा है। बुन्देलखण्ड की ही पवित्र भूमि में बसे चित्रकूट में भगवान राम ने अपना वनवास का समय व्यतीत किया था। नागवंश, मौर्यवंश, शुंगवंश, गुप्तवंश, चन्देल और बुन्देलवंश की क्रीडा भूमी यही प्रदेश रहा है। पृथ्वीराज चौहान, राजा संग्रामसिंह, वीरासिंहदेव, प्रसिद्ध आल्हा-ऊदल, वीर शिरोमणी हरदौलजू इसी भूमी में हुए हैं। इसी माटी ने रानी दुर्गावती और रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीराँगनाओं की तलवार में बिजली भरी है और भारत के स्वतंत्रता संग्राम में यही भूमि महत्वपूर्ण रही है। ऐसे प्रदेश के शौर्य का और क्या उदाहरण दिया जा सकता है। यहाँ की माटी में दधीचि पैदा करने की अपूर्व शक्ति है। इसलिए इस प्रदेश का हर निवासी वज्र सी कठोरता अपने बहुओं मे भरा रहता है। उसकी आनन्द मग्नता इससे घटती नहीं, बढती ही है। जैसे मार्ग में बाधा आने पर नदी का जल, बाधा को तोड़कर दुगुने वेग से बह निकलता है उसी तरह यहाँ की बाधाएँ यहाँ के जनमन को आनन्द की वेगमयी लहारों से आकण्ठ निमग्न करती रही है।''[3]

निष्कर्ष :-

इस तरह संघर्ष ही जिस भूमी का श्वास है, ऐसी बुन्देलखण्ड का परिवेश वहाँ के जन-जन में संघर्ष रत रहकर जीवन जीने के लिये नायक बनकर उन्हें प्रेरित करता है। जिसमे सामाजिक,धार्मिक एकता, सण-उत्सव, त्यौहार उनके जीवन में सुख-दुख के साथ

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ.33.

2) उषा भटनागर, 'वृन्दावनलाल शर्मा के उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन', ज्ञानप्रकाशन, कानपुर,प्र.सं.1992. पृ.26.

3) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण-2006, पृ.-195.

संगठन का महत्व जताते हुए आगे बढने की प्रेरणा यहाँ का परिवेशरुपी नायक ही देता है। जिसका सफल संयोजन मैत्रेयी पुष्पाने 'इदन्नमम' मे किया है।

4.4 'इदन्नमम' में युगचेतना का निरुपण :-

परिवर्तन सृष्टी का नियम है, प्रकृति में भी संयम के अनुसार परिवर्तन होता रहता है, जिससे प्रकृति में भी जीव-जंतूओ का जीवन प्रभावित होता रहता है। परिवर्तन से आये उतार-चढावे के साथ समझौता, समय आने पर संघर्ष करते हुए हर जीव जीने के लिए प्रयत्नशील रहता है। मानव जीवन भी परिवर्तन से बध्द है, फिर भी प्रत्येक मानव का अपना विशेष जीवन है। क्योंकि, मानव जीवन विचित्रताओं और विभिन्नताओं से भरा हुआ है। व्यक्तिविशेष जीवन को लेकर परिस्थितीयों के बीच रहनेवाली मनुष्यजाती जीवन अनुभूतियों पर संपन्न होती रही। मनुष्य जाती ने वह जिस युग में जी रहा है, उस समय के परिवेश से अपने जीवन को संवारते हुये मार्गक्रमण करना सीखा; यहाँ तक समय आने पर संघर्ष के लिये खड़ा हो गया। मनुष्य जीवन की परिभाषा डॉ. शशिभूषण सिंहलजी इस प्रकार करते है- ''जीवन का अर्थ- शरीरधारी में मानव में प्राणों का अस्तित्व, उसके जन्म से मृत्यु तक का काल। जीवन गतिशील है, वह एक यात्रा है, जिसका आरम्भ जन्म है और मंजिल मृत्यू।''[1]

युगो-युगों से संघर्षरत रहा मानव अपने जीवन मे परिवर्तन को स्विकारते हुये, प्राचीनता के प्रति विद्रोह और नविनता के प्रति आग्रही रहते हुये अपने जीवन का विकास करता रहा है। जिस भूमी, समाज, परिवार में वह रहता है वहाँ का आर्थिक, सामाजिक, राजनितिक, धार्मिक परिवेश उसे परिवर्तन के लिये प्रेरित करता है।

आज के भौतिक युग से भारतीय समाज में तीव्र गतीसे परिवर्तन की लहर आ गई, जिससे भारत देश की आत्मा 'गाँव' तेजी से परिवर्तीत होने लगे है। स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद सरकार ने ग्रामविकास के लिये अनेक परियोजनाओं का निर्माण किया; परिणाम स्वरुप भारत के ग्रामें की जिन्दगी में परिवर्तन हो गया। गाँव की अपनी व्यवस्था टूट गयी कल-कारखानों, सिंचाई परियोजना, हरित क्रांती ने तेजी बदलाव तो लाया परंतु उसके साथ नई समस्याओं ने जन्म लिया। सरकारी योजनाएँ, प्रकल्पों का फायदा उठाते हुए पुँजीपति,

---

1) डॉ. शशिभूषण सिंह, 'हिंदी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ', विनोद पुस्तक मंदिर, आग्रा, प्र. सं. 1970. पृ.27.

जमींदार, नेता और सरकारी अफसर अमीर बनते चल गये। तो दुसरी तरफ किसान भूमीहीन होते हुए, बेरोजगार, मजदूर बनकर रह गये। जिससे गाँव के लोगों की जिंदगी गरीबी और अभावों से घिर गई। परिणाम स्वरुप गाँव के लोगों के जिंदगी का नाम संघर्ष बन गया।

'इदन्नमम' मे मैत्रेयी पुष्पाने 'बुंदेलखण्ड' अँचल के स्वतंत्रता के बाद आये परिवर्तित गावों का जीवन संघर्ष चित्रित किया है। स्वाधीनता प्राप्ती के बाद भारतीय समाज दो भागों मे विभाजित हो गया। प्रथम-जमींदार एवं किसान के बीच चलनेवाला संघर्ष जो सदियों से चला आ रहा था वह प्रबल बना। द्वितीय-उद्योगपती और श्रमिक। औद्योगिकरण को बढ़ावा देने हेतू सरकारने 'भूमीअधिकरण' माध्यम से गाँव के लोगोंकी जमीन खरीद तो ले ली परंतु, उससे किसान के जीवन समस्या और विस्थापित किये गये लोगों के जीवन का संघर्ष तीव्र होता चला गया, जिसने क्रांती का स्वरुप ले लिया।

"मार्क्स क्रांति को एक ही सिक्के के दो पहलू स्वीकार करता है। दोनों एक दूसरे के अस्तित्व में सहायक होते हैं। एक के अभाव में दूसरे की कल्पना व्यर्थ होगी। शांती के लिए सदा क्रांति की आवश्यकता होती है। समाज के हानीकारक तत्वों के अन्त के लिए मार्क्स क्रांति को आवश्यक मानता है। जिसकी पुनरावृत्ति कभी-कभी प्रकृति में भी होती है।"[1]

आलोच्य उपन्यास 'इदन्नमम' मे भी मार्क्स के समाजवाद से चेतित समाज का चित्रण आ जाता है- स्वाधीनता के बाद विकास योजनाओं के तह सोनपुरा गाँव मे क्रेशर शुरु हो जाते है तो टिकमगढ़ जैसे आस-पास के गावों मे सिंचाई परियोजना के तह गावों की भूमी सरकार द्वारा ले जाने पर किसान मजदूर बन जाते है, उनके सामने रोजी-रोटी का सवाल खडा हो जाता है। तो सोनपुरा के पहाड़ पर पत्थर तोडने आये मजदूर विस्थापित है। संक्रमण अवस्था से गुजर रहा यह समाज अपने जीवन में बदलाव लाना चाहता है। जो भूमी हमारी है, श्रम हमारा है, उसका पूरा हक हमे मिलना चाहिए यह क्रांती की भावना उपन्यास की नायिका 'मंदा' उनमे निर्माण करती हुई, अपने हक के लिए अपना जीवन समर्पित करने के लिए तैयार हो जाती है।-

---

1) डॉ. हेमेंद्रकुमार पानेरी, 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास : मूल्य संक्रमण', संधी प्रकाशन, जयपूर, प्र. सं. 1974. पृ. 237.

''ओ अम् भुर्भव: स्व: अग्निऋषि पवमान: पांचजन्य

पुरोहित: तमी महे महागयम् स्वाहा।

इदं अग्ने पवनाय इदन्नमम''[1]

अर्थात, ''यह मेरा नहीं। जो कुछ मैं अर्पण कर रहा हूँ यह मेरा नहीं।''

जिस भूमि के मिट्टी से हम बने है उस भूमि पर अपना हक माँगने के लिये किसान तैयार हो जाते है- 'इदन्नमम' के द्वारका काक कहते है-''सोरह आना सही है। जमीन बेंचनी पडी तो क्या नरा गड़ा कोना भी बेंच दिया? जीने का हक्क भी बेंच डाला? हाथ-पाँव चलाकर पसीना बहाकर दो रोटी कमाने की मोहलत तो सब किसी के लिए है, हाथ-पाँव तो कोई नहीं खरीद सकता और हमें अपनी माटी पर ही खानाबदोस बनाने का अधिकार भी किसी का नहीं।''[2]

'इदन्नमम' की मंदा जब गाँववालों को चेतित करती है, तब बडे बुर्जुग कहते है- ''बेटा, गरीब और पइसावलों के बीच कैसी जंग? राजा और रंग में कैसा मुकाबला? ----- लोग समझ गये आज नींव पड़ी है तो जडें जमती ही जायेंगी व्यापारियों की। पहाड़ क्या आज ही खत्म हुआ जाता है? दो सौ साल में भी नहीं खोद पायेगा पूरा-का-पूरा। फिर तो आने वाले दिनों में इन व्यापारियों की औलादें खायेंगी इस पहाड़ को और खून पियेंगी हामारे वारिसों का। जैसे आज हामारी छाती पर गिट्टी कुट रही है, कुटती रहेगी पीढ़ी दर पीढ़ी।''

''सो जागो रे जागो! चेतो रे चेतो! छोटे-बडे, नन्हे-मुन्ने, बुढ़े-पुराने, नये जवानों के अलावा ढोर-चोंपे, परेवा-पंछी, नदी-नाल, पेड़-रुख, हवा-पानी यहाँ तक कि दसों दिशाओं को जागना होगा। बचने-बचाने को जूझना होगा। अमीर-गरीब, शत्रु-मित्र सबको शामिल होना होगा इस यज्ञ में। समय पड़े तो समिधा-सामग्री भी बनना होगा। बात होम की है। बात आन्दोंलन की हैं।''[3]

महाराज जी कहते है, ''संगंठन में शक्ति होती है। मिलकर चलेंगे। फिर अपनी शर्तें धरेंगे।''[4] यहाँ लेखिकाने भारतीय जनता में निर्माण हुई नव चेतना, नई क्रांती की ज्वाला को प्रस्तुत किया है।-

---

1) मैत्रेयी पुष्पा,'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण,2006. पृ. 191.
2) वही पृ. 196.
3) वही पृ. 197.
3) वही पृ. 198.

सबको अहसास है इस बात का कि हम समय चूके हैं। ससुर अज्ञानी सोते रहे आज तलक। हमने तो चलाई भी चरचा, पर सुनी ही नहीं किसी ने। कह दिया कि जे बिले-भर भइया लड़ने जायेंगे सिरकार-दरबार से। अरे कोसिस करने तो क्या न हो जाता! इसमें बिले-भर और छः फुटा आदमी में क्या फरक?''

''पर क्या बिगड़ा है अभी भी? जब जागो तभी सबेंरा है। आज से शुरु करते है।''[1]

समय चुके गाँव वाले अब जाग चुके है और क्रांती के लिये तयार हो चुके है। अपनी छिनी हुई भूमी पर रोजी-रोटी कमाने के हक के लिये लढ़ने के लिये तैयार हो जाते है जो विश्वभर में कार्ल मार्क्स के विचारों से प्रेरित होकर क्रांती को पुकारते समाज जीवन का चित्रण युग चेतना का स्वर है- ''समाजवादी परम्परागत अर्थ-व्यवस्था में मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव करते है। प्रचलित पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था का अन्त करके उसके स्थान पर एक ऐसी नई समाजवादी अर्थ-व्यवस्था स्थापित करना चाहती हैं जिसमें मूल-रुपसे उत्पादन शक्ति के साधन समाज के पास रहेंगे। उत्पादन शक्ति का सम्पूर्ण लाभांश समाज की उन्नति के हितार्थ व्यय किया जायगा। इसके लिए समाजवादी यह भी स्वीकार करते हैं कि यह परिवर्तन विधान द्वारा संभव न होकर क्रांती से ही हो सकता है। अतः समाजवादी क्रांती में विश्वास रखते है।''[2]

क्रांती पर विश्वास रखने वाली समाजवादी विचारों की पात्र 'मंदा' आलोच्य उपन्यास के लोगों को जागृत करती है- विस्थापित होकर सोनपुरा पहाड़पर मजदूरी का काम करनेवाले आदिवासीयों को कहती है- ''दुसरे ट्रैक्टर की बात छोड़ो। हम तो यह पूछ रहे हैं कि जंगली झाडियों के फल, पशुओं का चारा और तला-पखरों के जीव-जन्तु ही खाने हैं तो हाड क्यों तोडते हो? घन चला-चलाकर अपनी पसलियों को क्यों धुन रहे हो? चेंच-करमे-था खाकर जिओ और विषैले कीड़ा-मकोड़ा खाकर मर जाओ। इतनी-सी ही है न तुम्हारी जिन्दगी की कहानी।''[3] पूँजीपतिओं के विरुद्ध लढने के लिये मजदूरों मे आत्मविश्वास निर्माण करना, उनके श्रम का सही दाम माँगने के लिये जागृती करती मंदा कहती है,-

---

1) मैत्रेयी पुष्पा,'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण,2006. पृ. 207.
2) डॉ. हेमेंद्रकुमार पानेरी, 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास : मूल्य संक्रमण', संधी प्रकाशन, जयपूर, प्र. सं. 1974. पृ. 230.
3) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण,2006. पृ.281-282.

"क्यो नही कह सकते? मालिक! काहे का मालिक? होगा अपने क्रैशर का मालिक। अपनी पहाडिया का पाँच साल के लिए मालिक। तुम्हारा मालिक क्यों हुआ? वह भीख नहीं देता तुम्हें। न सदाव्रत लुटाता तुम्हारे लिए। उलटी तुम्हारी मेहनत का कर्जदार रहता है। कैसे चेतायें तुम मुरखों को जैसे इनके पास क्रैशर हैं, पहाड़िया है, मशिने है, किसानों के पास खेत हैं, अफसरों के पास उनकी पदवी है, मंत्री-संत्रियों के पास उनकी गद्दी-कुर्सी है, उसी तरह तुम्हारे पास मेहनत है, तुम्हारे हाथ-पाँव, तुम्हारा जीवट हैं। तुम उनकी तरह नहीं हो तो वे तुम्हारी नहीं हैं। नही कर सकते हाड़तोड़, पसीना-बहाऊ मेहनत वे लोग। वह केवल तुम कर सकते हो। फिर क्यों घिघियाते हो इनके सामने? क्यों बड़े मानते हो इन लोगों को? विरथाँ ही दीन बने रहते हो। इस तरह तौहीन न करो परिश्रम की।"[1]

पूँजी-पतियों के अन्याय-अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष लिये तयार हुये मजदूर वर्ग के बारे में हेमेंद्रकुमार पानेरी कहते है- "उच्च वर्ग निम्नवर्ग का शोषण करता रहा है। धन के बल पर पूँजीपति वर्ग द्वारा की जानेवाली मनमानी को श्रमिक विविश होकर स्वीकार करता है। इस विविशता का मूल कारण अर्थभाव है। मजदूर मालिक का समक्ष अपने को निर्बल अनुभव करता है। यही स्थिती जमींदार के समक्ष किसान की है। रुसी क्रांती की सफलता से सर्वहारा वर्ग को बल एवं आत्मविश्वास मिला है। श्रम की प्रतिष्ठाने परम्परागत मूल्यों में परिवर्तन किया है। अब सर्वहारा वर्ग अपने को निर्बल अनुभव नही करता। संगठित होकर सर्वहारा वर्ग अपनी शक्ति का एकीकरण और परीक्षण करने लगा है। जनतंत्र ने व्यक्ति की महत्ता को प्रतिष्ठा दी है। ऐसी स्थिती मे आर्थिक असंतुलन के विरुद्ध संघर्ष का तीव्र होना ही स्वाभाविक है।"[2]

युग चेतना के स्वरुप 'इदन्नमम' में आर्थिक असुंतलन एवं तज्जन्य परिवेश की अभिव्यक्ति हो गई है। बुंदेलखण्ड प्रदेश के किसान और मजदूर जागृत होकर पूँजीवादियों के साथ-संघर्ष के लिये खडे हो जाना युग चेतना का परिणाम है। मार्क्स के विचारों से जागृत होकर विश्वभर का मजदूर हक के लिए संघर्षरत दिखाई देता है। 'इदन्नमम' में मैत्रेयी ने मालिक और मजदूरों कें बीच के संघर्ष का चित्रण इस प्रकार किया है-"और भोर भये ही

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण,2006. पृ.281-282.
2) डॉ. हेमेंद्रकुमार पानेरी, 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास : मूल्य संक्रमण', संधी प्रकाशन, जयपूर, प्र. सं. 1974. पृ. 215.

वह हो पड़ा जैसा अभिलाख ने सपना न देखा होगा कभी? गाँव के लोग कल्पना न कर सकते होगें जिसकी तथा राऊतों को अभयदान देनेवाली मन्दाकिनी भी सुनकर स्तब्ध रह गयी उस घड़ी, जब पप्पू ने आँखो देखा हाल बताया।''

''शिकार के धनी राऊत, भील, सहारिया एक होकर चढ़ बैठे। चढ़ बैठे अभिलाख के कमरे पर। चढ़ बैठे लीला के उपर। गजब हो गया। गोंती, घन, कुदाली, फारुआं ले-लेकर आ गये। कर लिया आक्रमण।.... ''लिला चिलाई देख नहीं रहे, चारों ओर से टिड्डी दल की तरह राऊत टूट रहे हैं। हमारे जाने आनगावों के पहाड़ों से भी बुला लिए हैं भील और सहारिया। ठट्र बँधों ने पहले से ही सोच राखी होगी, मरने-मारने की। तुम जानते नहीं हमारी जात को, जब तक गुस्साते नहीं तब तक सहते रहते हैं सब कुछ, भले खाल छोल डारो उनकी। और जो किरोध आया तो परलय मचा देंगे। सो हम कहते हैं कि तुम ....

''वाक्य पूरा नहीं हो पाया, तुफान उमड़कर किवाड़ो तक आ पहुँचा। छत और दीवार पर चढ़ गये राऊत। अभिलाख की आँखे फटी रह गयीं।''

''बाहर से चिखने-चिल्लाने की आवाजें- ''लागो पथरा! घालो डीला! मारो घन! चलाओं गोली। कतल कर दो हरामी का। फरुआ चलाओंरे ....''[1]

स्वतंत्रा के बाद समाजवादी विचारधारा से जागृत भारतीय निम्नवर्ग, मजदूरवर्ग, भूमिहीन वर्ग नई क्रांती के लिये तयार हो गया, जिसके बारे में वेदकुमार अमिताभ कहते है- ''सरकारी योजनाओं की आंशिक सफलता ने भी भूमिहीनों और पीडितों को क्रध्द किया। प्रथम पंचवार्षिक योजना के तीन मुख्य लक्ष्य बताए गए थे- कृषि उत्पादन में वृध्दि, आय का समुचित वितरण कर दरिद्रता को दूर करना, नए कार्य क्षेत्र पैदा कर बेकारी को दूर करना। लेकिन इन उद्देश्यों की सिध्दी आंशिक तौर पर ही हो पाई। हरित क्रांती तो हुई लेकिन शोषन-उत्पीड़न कम नहीं हुआ, बेरोजगारी और बढ़ी, आर्थिक असमानता और बढ़ी। अतः शोषितों ने संघर्ष-संगठित, संघर्ष का मार्ग अपनाना उचित समझा। अपनी 'मुक्ति' के लिए 'हिंसा' तक को अनुचित न मानना इस बात का प्रमाण है कि अब श्रमजीवियों ने अखिरी लड़ाई लड़ने का मन बना लिया है और व सामंती मूल्यों का त्याग कर समाजवादी मूल्यों को अंगीकार कर चले है।''[2]

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण,2006. पृ. 285.

2) वेदप्रकाश अनिताभ, 'हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में मूल्य संक्रमण', वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1997. पृ. 116.

देश के कृषिप्रधान व्यवस्था का ढाँचा औद्योगिकरण के कारण टूट कर बिखर गया। देश में पूँजीवादी और मजदूर यह दो वर्ग निर्माण हो गये। परिणाम स्वरुप समाज अमीर और गरीब में बटता चला गया परंतु, गरीबी से त्रस्त होकर सर्वहारावर्ग, मजदूर वर्ग ने क्रांती का एलान किया। क्रांती के लिए संगठन का महत्व होता है, तभी क्रांती यशस्वी हो जाती है। 'इदन्नमम' के क्रांतीवादी पात्र 'कोयले के महाराज' (टीकमसिंह) 'मंदा' को संगठन का महत्व बताते है-''यह उन दिनों की बात है जब पारीछा थर्मल प्लांट की योजना चल रही थी। योजना तो कब से चल रही होगी, यह कहो उन दिनों लागू हो रही थी।

''बेतवा के किनारे बसे परीछा गाँव में सरिया, मुरम, गिट्टी और पत्थर ट्रक भर-भरकर आने लगे। खेतों मे होकर सड़के बनाई जाने लगी और उन सड़को पर इंजनों का कर्णभेदी कोलाहल घरघराने लगा। फसलें ही नहीं जैंसे किसानों के कलेंजे रौंदे जाने लगे हों। छटपटाने लगा आसपास के गाँवो का किसान वर्ग।''

''आखबारों में रोज समाचार छपता कि इस प्लांट से इस उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश के सैकड़ों गाँवों को बिजली मिलेगी। सिंचाई के साधन उपलब्ध होंगे और मशिनों द्वारा खेती हो सकेगी।''

''खुशहाली के इस सपने के साकार करने में जनता को भरपूर सहयोग देना चाहिए। बुन्देलखण्ड के विकास की यह अपूर्व घडी है। उज्ज्वल योजना की चर्चा मोंठ-चिरगाँव से लेकर ओरछा-टीकमगढ़ तक होती। उरई-जालौन से कोंच-कालपी तक।''

''तुम कहोगी कि यह तो विकास का महापर्व था, आप-संकट काल कहते है।

''महापर्व ही था बिटिया, किसी के लिए विकास का महापर्व तो किसी के लिए विनाश का महापर्व। पारीछा खुर्द जसौरा-खड़ेसर के विनाश का महापर्व! जहाँ के निवासियों को अपनी भूमि से उखाड़ा जा रहा था। बेदखल किया जा रहा था, खदेड़ा जा रहा था।''.............. ''पानी सिर के उपर आ गया।''

''जब गुहार-पुकार भी नही सुनी जाती तो आदमी किसी भी तरह अपने बचाव में खड़ा हो जाता है। उचित-अनुचित, सही-गलत का ताक पर रखकर संघर्ष करने लगता है।''................

"धीरे-धीरे राजनीतिबाज, अफसरो तथा बिचौलियों के दाँव-पेच उनकी समझ मे आ गये। पहचान गये हितू-मित्रों और शत्रुओं को। फिर क्या था, आव्हान किया अपने क्षेत्र के किसानों का। पुकारा एक-एक खेतीहर को, मजदूरों को और गाँव के बाशिन्दा पशुपालकों को। सबको एक सूत्र में बांधा। किसी भी लालच से खबरदार किया। किसी भी लोभ में न पड़ने की सौगन्ध धरायी, कौल दिलाये।"[1]

समाज के सर्वहारा वर्ग, मजदूर वर्गो में संगठन की शक्ति का प्रयोग किया जाये तो राजनितिक नेता, सरकार और अफसरों को उनके सामने झुकना पड़ता। एकता के बल का चित्रण 'इदन्नमम' में प्रस्तुत होता है-"सरकार झुकने लगी। केस का परिणाम टीकमसिंह के पक्ष में आया। काम तो वे ही हुए जो सरकार चाहती थी, लेकिन हुए टीकमसिंह की शर्तों पर।

"जमीन बिकी, लेकिन चौगुनी कीमत पर।

"रोजगार मिला तो पारीछा थर्मल प्लांट के आसपास बसे गाँवों के निवासियों को।"[2]

निष्कर्ष :-

इस तरह 'इदन्नमम' में मैत्रेयी पुष्पा ने स्वाधीनता के बाद भारत देश में विकास के साथ-साथ समाजवादी चेतना के परिणाम स्वरुप जनता अपने हक के लिये अधिकार के लिये लढती हुई, जागृत होती दिखाई देती है। सामाजिक उत्थान के लिये संगठन शक्ति की अनिवार्यता लेखिकाने बुंदेलखण्ड अँचल के मनुष्य जीवन के संघर्ष के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए, युग चेतना का यथार्थ चित्रण किया है।

अत: स्पष्ट है कि आँचलिक उपन्यासकार अपनी कृती में अँचल जीवन से प्रभावित होकर वहाँ के जीवनानुभूति को चित्रित करता है, जो चित्रण वहाँ की वास्तविकता का दर्शन पाठक के आँखे के सामने से चलचित्र कि तरह निकल पडता है। मैत्रेयी पुष्पाने लोकसंस्कृती से आँचल विशेष के लोगों को जागृत होते देखा है। 'रामायण' का हर दिन पठण करनेवाले इस समाज पर उसी 'रामराज्य' की अपेक्षा लिए लढ़ते दिखाया है।

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ.188-189

2) वही पृ.190.

लोकजीवन में धार्मिकता नस-नस में बसी है। जो उन्हे संघर्ष के लिए एकता के लिये प्रेरित करती है। आँचल विशेषता ही जनवादी चेतना को जागृत करता है। मानव जीवन के संघर्ष की कहानी लिखता है। जिससे साहित्य भी अछूता नही रह सकता। परिणाम स्वरूप आँचलिक साहित्य में आँचल विशेष को महत्त्व प्राप्त होता है। शशिभूषण सिंहल कहते है - ''आँचलिक उपन्यासों में आँचल तथा घटना क्षेत्र के कथा विकास का साधन न रहकर कथा का कथ्य स्वयं बन जाता है। आँचल के भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आदि पक्षो को उद्घाटित कर वहाँ की संस्कृति तथा वहाँ के निवासियों की मनोवृत्ति का चित्र प्रस्तुत करता है।''[1]

4.5 'इदन्नमम' में शोषण की प्रस्तुति :-

'इदन्नमम' में मैत्रेयी पुष्पा ने बुण्देलखण्ड के ओरछा प्रदेश के आस-पास के गाँवों के किसान और मजदूर वर्ग के जीवन संघर्ष को वाणी दी है। आजादी के बाद देश में विकास लाने हेतू पंचवार्षिक योजनाओं का निर्माण होता रहा जिससे गाँवों मे सिंचाई योजना, कृषि योजनाओं, कल कारखानों के निर्माण से आर्थिक और कृषि विकास का ध्येय रखा गया। विकास योजनाओं को साकार करने के लिये भूमिअधिकरण जैसे कानून बनाकर गाँव-गाँव की भूमी लेली, परिणाम स्वरूप गाँव विस्थापित किये जाने लगे; परंतु अपनी भूमी से नाता काटकर दूर जाने से इन्कार किये किसानवर्ग का रोजी-रोटी के लिये संघर्षरत जीवन और विस्थापित होकर मजदूर बने आदिवासी वर्ग के शोषण का चित्रण यहाँ प्रस्तुत होता है। परंपरा से चले आये शोषण के बदलते स्वरूप, विकसीनशील भारत के बदलते समाज जीवन का नया रूप प्रस्तुत होता है। 'सामंती और जमींदारी शोषण ने सदियोंसे भारतीय जनजीवन को जकडकर रखा था जो स्वतंत्रता के बाद औद्योगिकरण, आर्थिक विकास योजना के निर्माण तहत पूँजीवादी, सेठ, साहुकार, ठेकेदार, सरकारी अधिकारी और राजनीतिक लोगों ने वही परंपरा आगे बढ़ाते हुये किसानवर्ग और नये से निर्माण मजदूरवर्ग का शोषण शुरू किया।'

पूँजीपतियोंद्वारा किये जानेवाला शोषण 'इदन्नमम' में जीवंत हो उठा है - ''जिज्जी, कुछ भी खराब होता रहे, काम तो हर हालियत में करना पडेगा। नातर खायेंगे कहाँ से? मालिक जी जब जास्ती काम करा लेते हैं तो बस इनका हाल ऐसा ही देखलो।''

---

1) डॉ. शशिभूषण सिंह, 'हिंदी उपन्यास की प्रवृत्तियों' विनोद पुस्तक मंदिर, प्र.सं. 1970, पृ.120

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

लछो भीतर जाकर शायद कनस्तर टटोलने लगी। टीन बजने की आवाज आ रही थी। तली तक थाह लिया। उसका हाथ खाली टीन से ही टकराता रहा।

वह माथा पकड़कर बैठ गयी। चन्द्रमा की जुलाई में उसकी मुद्रा और परबतिया का बेहाल होना साफ दिख रहा था। ''लो जिज्जि, हम तो बेध्यानी में जे समेत भूल गये कि आटा तो आज क्या, परसों नहीं है घर में। और हम हैं कि खखोले जा रहे हैं कनस्तरी। ''लछो ने अपने माथे पर हथेली मारी।

सामनेवाली टपरिया में चूल्हा जलता देखकर लछो अचानक उठ बैठी। ललकती हुई निगाहों से देखती रही। फिर बोली, ''चलो जिज्जि, तुम्हे छोड आवें।''

''वह कुछ बोलती तब तक परबतिया की उखड़ती हुई साँस ने भीषण रूप धारण कर लिया। लछो पीठ सहलाने लगी और उसे सहारा देकर धरती में ही बैठ गयी।

''घबराओं जिन। पानी पीलो। सान्ति आ जाएगी।'' उसने पति के मुख से पानी - भरा लोटा लगा दिया। तीन-चार घूँट ही निगले होंगे कि परबतियाँ रुआँसा हो आया हाँफता हुआ बोला, ''लछो, भुखे पेट पानी भी नहीं सुहा रहा। कड़वा लगता है। मिचली, सी उठ रही है भीतर से।''[1]

इस तरह हाड़तोड़ मेहनत करने के बाद भी मजदूरवगर्ग एक वक्त की रोटी के लिये मुहताज बन जाता है और पूंजीवादी लोग मजदूरों से ज्यादा काम करवा के उनके जीवन के साथ खेलते रहते है।

सेठ, मालिक, साहुकार त्यौहार-उत्सव, शादी-ब्याह के मौके पर किसानवर्ग, मजदूर वर्ग को सुद पर ऋण देते है परंतु, उसे चुकाने के लिये उन्हें आउग्र अन्याय, अत्याचार का शिकार होना पड़ता है- ''मालिक जी, 'जुर चढ़ा है। सोये नहीं रात भर सो....' जिज्जी, इतेक बात हमारे मुख से बड़ी मुस्किल से कढ़ी।

''वे कहने लेगे, 'जूर। चढ़ा है सो ? पइसा फँसा पड़ा है, उसके लिए क्या करें हम ? सोलिंग नहीं होगा तो मसीन मे क्या पिसेगा ? जगा जल्दी, एक ट्रक सोलिंग निकालेगा।''[2]

मालिक, ठेकेदार लोग मजदूरो से मशीन की तरह उनसे काम करवा लेते है और उनका शोषण करते हरते है।

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण,2006. पृ.227.

2) वही पृ. - 229.

सरकारी अफसर भी अपने पद का गलत उपयोग करते हुये, किसान वर्ग को लूटता चला जा रहा है - ''प्रधानकाका ने जेब से बीस रुपये निकाले। उसे लगा, रोक दे काका को। देखते ही छोटे बाबूजी की त्यौरियाँ चढ़ गयीं। बोले, ''भिखारी को दे देना प्रधानजी। सौ का पत्ता लगता है इस टेबिल पर। फाइल चढ़ने की सीढ़ियों का रेट नहीं मालूम करके आयें, तो सुन लो, यह रेट बढ़ता जाएगा आगे तक। यानी सी.एम.ओ. तक। हम तों इसलिए बता रहे हैं कि धूप-गर्मी में आप महीनों सें परेशान हो रहे हैं। साथ में यह लड़की।''[1]

यहा लेखिका ने शासन दरबार के अफसर लोग और राजनीतिक लोग साझादारी के साथ सामान्य जनता का शोषण करती रहती है, इस सत्य को दिखाया है।

आज परंपरा से चले आये शोषण का स्वरूप सिर्फ बदला है लेकिन शोषण तो जारी ही है इस बारे में डॉ. शिवाजी सांगोळे कहते है - ''आज पूँजीवादी भूस्वामी शासन के अन्तर्गत भारत की जो खेतिहर परिस्थिती मौजूद है वह न तो शास्त्रीय ढंग का सामंतवाद है और न ही विकसित पूँजीवादी द्वारा लादा गया शोषण है जिसका अर्थ है कि सामंतवादी व्यवस्था के ऊपर लादा गया पूँजीवादी शोषण परिस्थितियों का यह उलझाव हिन्दी साहित्य के विविधरूपो में उभरा है।''[2]

निष्कर्ष -

मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' में कारखानों के मालिक, ठेकेदार, अधिकारी वर्ग और राजनीतिक नेता लोग किसान वर्ग और मजदूर वर्ग के अभावग्रस्त, गरीबी का फायदा उठाकर ज्यादा काम करवाना, बेगारी करवाना, स्त्रीयों पर, बाल - बच्चो पर अत्याचार करना इस तरह शोषण करते रहते है, इसका वर्णन यथार्थता के साथ प्रस्तुत हुआ है।

4.6. 'इदन्नमम' में स्त्री-पुरुष संबंध-

भारतीय समाज में स्त्री-पुरुष संबंधो को मान्यता देने के लिये प्राचीन काल सें 'विवाह' नामक व्यवस्था समाज मान्य है। विवाह के बाद पति-पत्नि के बीच के सम्बन्ध प्रेम, विश्वास और नैतिकता के धरातल पर आधारित रहते है; इसमें किसी एक का

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ.169.
2) डॉ. शिवाजी सांगोळे, 'हिन्दी कथा साहित्य में ग्रामीण चेतना', समता प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. 2006. पृ.155.

अविश्वास, एक की अनैतिकता (अश्लील-बाह्य-संबंध) सहजीवन को ध्वस्त कर देती है। प्राचीन काल से परम्परागत विवाह पध्दती को स्विकार करते हुये माँ-बाप ने चुने हुए 'वर' (पति) के साथ लड़की शादी करके अंत तक पत्नि का रिश्ता निभाती थी। 'पतिव्रता धर्म' भारतीय स्त्री जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है बल्कि उसके चरित्रता का प्रमाण होता है। आज के आधुनिक काल में पाश्चिमात्य सभ्यता एवं शिक्षा के प्रभाव के कारण परंपराओं का विरोध एवं मूल्यो में परिवर्तन आकर भारतीय समाज में एक नयी स्थिती ने जन्म लिया। "विवाहोपरान्त पति अथवा पत्नी का तीसरे को समान्तर लेकर चलना नैतिकता की नयी स्थितियों को जन्म दे रहा है।"[1] व्यक्ति स्वतंत्रता, नारी स्वतंत्रता के नाम पर भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों मे परिवर्तन आने लगा; विवाह संस्था टूटती हुई नजर आने लगी है। विवाहपूर्व यौन संबंध, विवाहोपरान्त अवैध स्त्री-पुरुष संबंध, पुरुष द्वारा स्त्री पर किये जाने वाले अत्याचार, प्रेम के तहत यौन संबंध निर्माण हो रहे है। दांपत्य-जीवन में तनाव, पति-पत्नी का अहंम्, पतिद्वारा पत्नी का शोषण, असहज दाम्पत्य जीवन, पति-पत्नी के बीच स्वभावगत वैचारिक भिन्नता पति की क्रुरता, बहुपत्नित्व, विवाहपूर्व संबंध, यौन आकर्षण इन कारणों से आज ग्रामीण जीवन में नैतिक मूल्यों में बदलाव आ रहा है। परिणाम स्वरूप; पति-पत्नि का विघटन, परिवार का विघटन जैसे प्रश्नों ने जन्म लिया हैं।

रोजी रोटी (भुख) की तरह यौन सम्बन्ध भी मनुष्य की शारिरिक आवश्यकता है। 'इदन्नमम' में मैत्रेयी पुष्पाने स्त्री-पुरुष संबंध को दर्शाया है।

'इदन्नमम' के बऊ कि बहू (प्रेम) पति महेंदर के कत्ल के बाद अपने बहनोई के संग अवैध संबंध स्थापित करते हुए उसके साथ भाग जाती है। श्यामली पनाह ली बऊ प्रेम पर क्रोध उतारते हुए दादा पंचमसिंह को कहती है। "महेंदर के मरते ही बहू ने तीन दिन अन्न ग्रहण नहीं किया, रतनसिंह ने उस पर जादू किया, रतनसिंह उसकी सुन्दरता पर आकर्षित हुआ, वह उसके संग भाग गई अब वह बिटियाँ का हक माँगने लगी है।" बऊ कहती है - "ज्वानी तो मार रही थी रंडी की; तो मोंडी के सामने ही बहनोई के संग।"[2]

---

1) डॉ. शिवाजी सांगोळे, 'हिन्दी कथा साहित्य में ग्रामीण चेतना', समता प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. 2006, पृ.30.

2) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण,2006, पृ.27

प्रेम के गाँव के अन्य पुरुषों से भी चोरी-चुपे यौन संबंध थे। जिसकी बाते जगेसर बऊ को बताता है - "जगेसरा महाचांडाल। उसकी कुभाखा सुनकर लगता था कि कानों के परदे फट जायेंगे" बऊ तेरौ कोल, प्रेम भौजी चमेली खसिया से गोलियाँ मँगाती थी कि पेट में बच्चा न रह जाए। क्या करें, मन चलायमान है भौजी का और आँखे चंचल। पर कुछ तो दु:ख भी है महेन्दर भइया का, तभी तो रामरतन के कंधे पर सिर रखकर रोया करती थी।"[1]

यहाँ लेखिकाने अवैध संबंधो के कारण अवैध संतान और भ्रूणहत्या जैसी निर्माण होनेवाली समस्याओं की तरफ ध्यान आकर्षित किया है।

भारतीय समाज में यदि कोई स्त्री अवैध संबंध स्थापित करती है। तो उसे बदचलन एवं भ्रष्ट (चरित्रहिन) समझकर समाज से बहिष्कृत भी किया जाता था। इन सब सामाजिक विसंगतियो से टक्कर लेना भारतीय नारी के वश की बात नहीं थी, वह हमेशा चारित्रिक शुद्धता के प्रति जागृत रहती थी। परंतु पाश्चिमात्य विचारों के प्रभाव से, शिक्षा प्राप्त करने या समाज सुधारकों के प्रयास से भारतीय नारी अपने हक्क के प्रति जागृत होती चली गई। स्वाधीनता में व्यक्ति स्वतंत्रता का महत्त्व बढ़ता गया और भारतीय नारी ने परंपरा से चली आई अपनी श्रृंखलाओं को तोंड दिया। यहाँ तक की नैतिकता के मापदंड के विरोध में भी उसने आवाज उठाई।

आलोच्य उपन्यास में भी कुसुमा नैतिकता के संबंध में बात करती है -"बिन्नू, हमें एक बात समझाओं अरथाओं की ये रिस्ते-नाते सम्बन्ध और मरजाद किसने बनाई? किसने सिरजी है बंधनों की रीत? जो नाम लेती हो उनने? मनु-व्यास ने? रिसियों-मुनियों ने? देवताओं ने कि राच्छसों ने?"

"मन्दाकिनी पढ़ना रोककर भाभी को गौर से देखने लगी। क्या उत्तर दे इन सवालों का?

"भाभी, ये रीति-रिवाज तो उन्होने ही बनाए हैं, जिनने ये किताबें लिखी हैं, जिनके ऊपर ये किताबें लिखी गयी हैं।"

"गलत बनायी हैं मन्दा। एकदम पच्छपात से रची है।

"पति और पत्नी को साथी-सहचर कहें तो विरथा हैं कि नहीं?

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण,2006, पृ.27

''कितेक उलटा है बिन्नु, बेअरथ ! यह सम्बन्ध बड़ा थोथा है।

''लो, एक तो खूँट बाँधा पाँगुर, दूसरा सरग में उड़ता पंछी !

''ढोर और पंछी सहचर नहीं हो सकते मन्दा....।''[1]

यहाँ पति यशपाल से प्रताडित कुसुमा अपना यौन सम्बन्ध रिश्ते से ससूर दाऊज (अमरसिंह) से स्थापित करती है और स्त्री को भी सहजीवन निभाते समय यौन-सम्बन्ध की बराबर की अधिकारिणी होती है। समाज के बंधनों को ढोने का जीमा व्यवस्था ने स्त्री को दिया है। नैतिकता के श्रृंखला से उसे बाँध रखा है, इसका विरोध करनेवाली प्रतिनिधी पात्र के रूप में अपना अधिकार माँगती स्त्री के रूप में कुसुमा को चित्रित करते हुए मैत्रेयी पुष्पा ने अपने स्त्री विमर्श को व्यक्त किया है।

दाम्पत्य जीवन में तणावग्रस्तता, पति की प्रताड़ना, यौन आकर्षण, प्रेम, विधवा जीवन इन कारणों से समाज में अवैध संबंध निर्माण होते है। ''ग्राम्य जीवन में यह स्थिती जब देखने को मिलती है जब पति-पत्नि के पारस्पारिक सम्बन्धों में या उनके वैवाहिक जीवन में किसी तिसरे प्रेमी अथवा प्रेमिका का आगमन होता है। प्रेम की त्रिकोणात्मक स्थिती पारस्पारिक संघर्ष में परिवर्तित हो जाती है। और आकर्षण विकर्षण में बदल जाता है। विवाहोपरान्त पति अथवा पत्नि का तीसरे को समान्तर लेकर चलना नैतिकता की नयी स्थितियों को जन्म दे रहा है।''[2]

अवैध सम्बन्धों के कारण अवैध संतान को लेकर समाज-परिवार में उनके प्रश्न निर्माण हो जाते है। 'इदन्नमम' में कुसुमा और दाऊजी के अवैध सम्बन्ध से प्राप्त अवैध सन्मान को पति यशपाल के साथ-साथ परिवार के सदस्य भी स्विकारना नही चाहते। तब भी कुसमा बच्चे के पिता का अधिकार बच्चे को देने की बात जब कहती है, तब दादा पंचमसिंह उसके बातों का समर्थन करते है। ''बहु, तुम ही गम खा जाओ। अपनी सास और यशपाल की बात पर कान न धरो। तुम गैर नहीं, बहू हो इस घर की। कुटुम्ब-परिवार, यह घर तुम्हारा नहीं क्या ? जैसा चाहोगी, हो जाएगा।''[3] यहाँ वर्तमान नारी अपने अधिकार

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ. 83.
2) डॉ. हेतेंद्रकुमार पानेरी, 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास मूल्य संक्रमण; संधी प्रकाशन, जयपुर, प्र.सं. 1974, पृ. 230.
3) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ. 84

के प्रति सजग होती दिखाई देती है, साथ- ही साथ अपने संतान के अधिकार के प्रति भी वह जागृत है। यहाँ अवैध संतान को भी उसका अधिकार मिलना चाहिए यह नया मूल्य दृष्टव्य है।

संयुक्त परिवार की व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण रहा तत्व कुलीनता और कुलमर्यादा के विरोध में आवाज उठाती 'इदन्नमम' कि कुसुमा भाभी व्यक्ति की नीजी अभिरूची और अधिकार को प्रस्तुत करनेवाला पात्र है। जो थोथी परंपरा में पुरुष दंभ के नीचे कुचलनेवाली नारी की मुक्ति की आवाज को वाणी देती है।

दरिद्रता, आर्थिक विवशता के कारण भी समाज में अवैध स्त्री-पुरुष संबंध निर्माण होते है। 'इदन्नमम' में भी आर्थिक विवशता का फायदा उठाकर ठेकेदार 'अभिलेख पहाड़ तोड़नेवाली राऊतजाती की आदिवासी स्त्रियोंसे जबरन यौन संबंध रखता है। आर्थिक विवशता दरिद्रता के कारण मजदूरवर्ग कि स्त्री अवैध संबंध स्थापित करती दिखाई देती है, या उसका फायदा उठाकर उन्हें वेश्या व्यवसाय के लिये बेचा जाता है। अभिलेख ठेकेदार राऊतजाती के स्त्रियों को शहर के बाजार में ले जाकर बेच देता था।

"राऊत नहीं मानते। चिल्ला-चिल्लाकर कहते हैं कि अभिलाख ने बेंची हैं। कींमत वसूल कर लाये हैं हमारी औरतों की। खोटा व्यापार करते है अभिलाखसिंह।"[1]

गरीबी के कारण छोटी उम्र में स्त्री जाती का शोषण होता रहता है। 'इदन्नमम' में भी जगसेर अपने बेटी के उम्रवाली लड़की अहिलया से यौन-संबंध रखता है। दरिद्रता के कारण छोटी उम्र में वासना का शिकार होती स्त्री के बारे में 'इदन्नमम' की तुलसिन राऊतीन कहती है -"अरे हमारी तो बेबसी है ठेकेदार हमें पेट के लाने दिन में ही पथरा नहीं तोड़ने पड़त रात में देह भी... हमें बिना रौंदे-चीथे तुम्हारी बिरादरी के लोग पत्थरों से हाथ नहीं लगाने देते। बिटियाँ का करें, बूढ़ी मताई को, बाप को काम नहीं देता कोई... और जनी की जात मरद बिरोबर काम नहीं कर पाती सो सहद के छत्ता की तरह निचोरत हैं। मालिक लोग...."[2] बचपन में ही स्त्री जाती को वासना का शिकार बनन पड़ता है और ठेकेदार, मालिक लोक परंपरा से मजदूर वर्ग के स्त्रियों पर अत्याचार करते आये है। इस बात को लेखिकाने स्पष्ट किया है।

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ. 285

2) वही पृ. 224

यौवन अवस्था के आगमन से ही स्त्री-पुरुष में यौन आकर्षण निर्माण हो जाता और उसे प्रेम का नाम देकर शादी के पूर्व ही यौन संबंध स्थापित हो जाते है। 'इदन्नमम' में मंदा और मकरंद की शादी के पूर्व की यौन चेष्टाओं का वर्णन आ जाता है।

"मकरन्द ने उसकी, बाँह कसकर पकड़ी और जा पहुँचे ढोरवाली बखरी में, जहाँ कोई न था। जहाँ अँधेरा था। जहाँ वे एक-दूसरे को देख तक न पा रहे थे।

"हाथ छोडो"

"नही"

एका एक मकरन्द ने अपनी बाहों के घेरे में ले लिया उसे।

वह चौंक गयी।

कसमसाने लगी

"रह लीं हमारे बिना?" अपनी छाती से उसे चिपकाकर पूछ रह थे मकरन्द।"[1]

प्रेम के लिये निर्माण हुये यौन संबंध में एक अपनी ताकत होती है, जो जिंदगी भर स्त्री-पुरुष को एक-दूसरे से बाँध रखता है। प्रेम में उत्कटता, कल्पना और कोमलता का बराबर समर्थन किया है जो जीवन का एक अंग है, प्रेम के बिना मनुष्य जीवन अधुरा है, प्रेम मनुष्य जीवन में संजीवनी जैसा कार्य करता है। लेखिका कहती है - "इसमें खुलापन है, संयम है, त्याग - उत्सर्ग की तड़प है और टूटने-बिखरने के बजाय जुड़ने-जोडने-सँवारने की शक्ति है।"[2] "समष्टिगत प्रेम मानव को दु:खो के गर्त से बाहर खींचता है।"[3]

यौन-संबंध मे अवैध संबंध के निर्माण में समाज के नैतिक मूल्यों मे दरार आ जाती है परंतु वही यौन-संबंध प्रेम के होते शादी में परिवर्तित हो जाये तो सहजीवन सफल बन जाता है। तो दुसरी तरफ वासना का शिकार बनी मन्दा और सगुणा का जीवन उद्धवस्त होता दिखाई देता है।

'सेक्स' एक जैवीय आवश्यकता है परंतु यौन उच्छृंखलता को मैत्रेयी ने अस्विकार करार दिया है। स्वच्छंद यौनाचार के कारण चरित्र कि कटुभर्त्सना हो जाती है, यहाँ तक

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ. 55
2) वही पृ.60
3) वही पृ.163

कि समाज स्त्री के प्रति आवाज उठाते हुये समाज से बाहर कर देता है। अवैध संबंधों में समाज से प्रताडित किये जाने पर सबसे ज्यादा भर्त्सना स्त्री जाती को ही झेलनी पड़ती है। भारतीय पुरुष प्रधान समाज पुरुष जाती को सहजता माफी दे देता इसबारे में लेखिका ने 'इदन्नमम' मे सवाल उठाया है - ''वे सब पुरुष-प्रधान समाज के अवसरवादी प्रसंग हैं। एक ओर पतिव्रत धर्म की परिभाषा करता राम के साथ सीता का वनगमन, दूसरी ओर उसी निष्ठा को तोड़ता मर्यादा पुरुषोत्तम राम का सीता की अग्नि-परीक्षा लेना। सीता ने क्यों नहीं माँगा कोई सबूत कि हे भगवान कहे जाने वाले राम, तुम भी तो उस अविध में मुझसे अलग रहे हो, अपने पवित्र रहने की साक्ष्य दो।''[1]

मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' में 'सेक्स' जहाँ प्रेम, सहजीवन, विश्वास है यह मंदा, मकरंद, गणेशी-तुलसीण के उदाहरणो के साथ-साथ वह व्यभिचार भी है। जो जगेसर-अहिल्या, अभिलाखलिला राऊतिन के उदाहरणों से स्पष्ट किया है। तो दुसरी तरफ 'सेक्स' शारिरीक आवश्यकता को 'कुसमा-दाऊजी' के माध्यम से स्पष्ट करते हुये आज भारतीय समाज के नैतिक मूल्यों को टूटते बिखरते दर्शाया है।

4.7) 'इदन्नमम' में प्रकृति :-

परिवेश चित्रण आँचलिक उपन्यास का आवश्यक तत्व है। जिसमें अंचल विशेष के परिवेश का चित्रण रहता है। 'अँचल' विशेष की अलग भौगोलिक सीमा होती है 'जिसे उपन्यासकार उपन्यास में विशेषताओं के साथ चित्रित करता है। आँचलिक उपन्यास के प्रमुख तत्व अँचल विशेषता को, उसके भौगोलिक विशेषता को बध्द करके उपन्यासकार प्रस्तुत करता है।

डॉ. इन्दिरा जोशी कहती है - ''प्रत्येक प्रदेश-विशेष का एक बाह्य अथवा मूर्त रूप उपन्यासकार के द्वारा पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। यह चित्रपटी, चित्र-विचित्र एवं नवरंग-रंजित पाई जाती है; और इसमें हिम-मण्डित पर्वत-शिखरों से लेकर, विनम्र कुटीर के छप्पर तक का चलचित्र पाठक के समक्ष घूम जाता है।''[2] आँचलिक उपन्यास का आत्मा ही प्रकृति चित्रण है। क्यों कि आँचलिक उपन्यास किसी भी राष्ट्र

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ. 269

2) डॉ. इन्दिरा जोशी, 'हिन्दी आँचलिक उपन्यास उद्‌भव और विकास', देवनागर प्रकाशन, जयपुर, प्र.सं. 1985, पृ. 14

के किसी भी विशिष्ट भाग, क्षेत्र, स्थान विशेष अथवा प्रदेश विशेष को केन्द्र बनाकर हि लिखा जाता है। आँचलिक उपन्यास में प्रदेश विशेष की विशिष्टताओं से युक्त जन-जीवन का परिचालित होता है जिसके प्रभाव से उपन्यास के पात्र अटूट नही रह सकते है। यहाँ तक की आँचलिक उपन्यास पढनेवाला पाठक भी वहाँ के प्राकृतिक वातावरण में सैर करके आ जाता है। वहाँ के पात्रों में से एक अपने को वह महसूस करने लगता है इतना प्रभावी तत्व प्रकृति चित्रण यह आँचलिक उपन्यास का रहा है। डॉ. इन्दिरा जोशी कहती है।- ''जातीय स्वभाव की भाँति, प्रदेशगत स्वभाव भी पात्रों को अभिभूत करता रहता है। और वह उनके जीवन-दर्शन एवं विचार-धारा का भी, 'अभिन्न' अंग बन जाता है।''[1] इसतरह आँचलिक आभा से मण्डित उपन्यासों में कुछ निर्विवाद विशेषताओं मे से प्रकृति चित्रण को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। ''आँचलिक उपन्यास हमें अपने देश की चित्रविचित्र प्रकृतिगत समृध्दि, सुषमा एवं गरिमा से परिचित करता है और हमारे हृदयों में उसके प्रति आत्मीय स्निग्धता का उद्रेक करता है।''[2] जिस प्रकृति के बिच में रहकर मनुष्य अपना जीवन गढ़ता है वहाँ की मिट्टी अबो हवा से उसका पोषण होता है। मानव जीवन चित्रण करते समय जिस प्रकृति के बीच उसका जीवन मार्गक्रम करता है उस प्रकृति का चित्रण होना सहज बात है। काव्यशास्त्र में तो प्रकृति को उद्दिपन-भाव के रूप में स्विकारा है। 'इदन्नमम' में भी मैत्रेयी पुष्पा ने प्रकृति का चित्रण बेखुबी से करते हुए-''बुंदेलखण्ड के गाँव पर्वतीय - पहाडी इलाकों मे बसे है। ''बेर की कटली झाडियों और गुलर के पेडों से आच्छादित गैल से निकलकर बैलगाडी सड़क पर आ लगी। सड़क-सड़क चलते ही लिपी दीवारों वाले घरौंदो की खपरैलें तथा बीच गाँव में बने पक्के अटाओं की झिलमिलाती सफेदी दिखाई पड़ने लगी।''[3] यहाँ पहाड़ियों के बीच बसे गाँव का वर्णन दृष्टव्य है।

'इदन्नमम' की नायिका मंदा, श्यामली में पनाह पा गई थी, परंतु उसे पकड़ने के लिए माँ (प्रेम) ने केस दायर किया था। पुलिस उसे लेने श्यामली गाँव आ जायेगी इस ड़र

---

1) डॉ. इन्दिरा जोशी, 'हिन्दी आँचलिक उपन्यास उद्भव और विकास', देवनागर प्रकाशन, जयपुर, प्र.सं. 1985, पृ. 15

2) वही पृ. 18

3) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण,2006. पृ.9

से उसे पहाड़ी इलाके में एक आरण्य में छिपा दिया जाता है। वहाँ के प्रकृति का चित्रण पाठक के सामने जीवंत हो उठता है।

"सूरज ढ़ल रहा है।

घनेरे वनों मे सुनहरी किरणों की लाल चमक करधई और खैर की फुनगियों को रँग रही है।

रोशनी, पलाश, सेमल और कदम्ब के फूलों में भटक रही है। और भटक रही है मन्दाकिनी। बबूल और सागौन की छतनार छाया में अँधेरा ही अँधेरा, चारों ओर कँटीली झाडियाँ ही झाडियाँ।

मन्दाकिनी गढ़ी की कूँगरेदार छत पर खड़ी थरथरा रही है। आसपास फैले निर्जन एकान्त में जंगली पंछियों की कर्णभेदी चिचियाहट, मनोरम गंध से भी भय लग रहा है। कहीं करौंदी कुंज में कोई प्रेत तो नहीं बसता ? बऊ कहती हैं। खसबोई पर रीझ जाते हैं भूत-प्रेत। हवा के तेज झोकों में कोई चुड़ैल उड़ा रही हो सुगंध।

मन्दाकिनी ने इधर-उधर देखा। नहीं, कोई नहीं। लगा था, पीछे कोई छाया-सी खड़ी है।

वह जल्दी-जल्दी नीचे वाली छत पर उतर आयी, जहाँ बऊने दालान में रहने की व्यवस्था की है।

निचली मंजिल भी झरोखादार गोखें धरती से काफी उँची है। ओरछा का किला धुँधला-सा दिखाई देता है, ज्यों अँधेरे में विशालकाय हाथी बैठा है।

गनपत कक्का कहते है, "तुंगारण्य के जटा-जूट और सात धाराओं में बहती 'बेतवा' यही पास में है।"[1]

पहाड़ी इलाके में रहनेवाले लोगों का जीवन संघर्ष से भरा रहता है। हर दिन काटों से भरे पथ से उन्हे गुजरना पड़ता है। वेदना से भरी गैल ही उनका जीवनपथ बन जाता है। खुद लेखिकाने 'इदन्नमम' में यह बात कुसुमा के माध्यम से कही है।"तुम्हीं अेकेली जानती हो क्या इन बीहडों का अता-पता हमें भी चिन्हार है बिन्नू, कंटकभरी गैल की। तुम अकेली ही नहीं भटक रही बिन्नू, इस वखत हम भी जानते है। विलात बाते।"[1] पहाड़ी -पर्वतों के

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ. 56

2) वही पृ. 59

बीच रहनेवाले लोगों को जीवन का संघर्ष करना ही पड़ता यह अँचल विशेषता यहाँ व्यक्त हो जाती है।

बुंदेलखण्ड निवासियों को आषाढ़ मास में प्रकृति का उग्र रूप देखने को पड़ता है। "उमस भरी घाम है। तीखी किटकिटाती गर्मी ने बेहाल कर रखा है। बऊ को। बादल का एक टुकडा भी नहीं। उन्होंने आकाश की ओर निगाहें उठा दीं। आषाढ़ मास में भीषण ताप। व दो पल की छाँव जोह रही हैं। कि स्थान आ जाए कोई बदरई।"[1]

गर्मी के दिन में कड़ी धूप में सें कटिले रास्तों से हर दिन का गुजरना तप से बड़कर है। कोयले के मठ पर महाराज को मिलने जाते समय वहाँ की गैल का चित्रण भृगुदेव कहता है यहॉ का जीवन ही संघर्ष से भरा है। "दक्खिनी बबूल और करौंदो के झाडों से निकलते हुए पाँव लहू-लुहान होने लगे। जोग में जूते पहनना वर्जित है।"[2]

बारिश के दिनों में तो बुंदेलखण्ड में मृत्यु तांडव करने लगता है। बरसात देंखी है मन्दाकिनी ने। क्रैशर पर बरसात होती है, मालिक और मजदूरों दोनो के लिए अशुभ। बेकारी -भरी और हानिकारक।

खदानों में पानी भर जाता है, पत्थर नहीं टूटता। गिट्टी भीगकर भारी हो जाती है। बजरी बह जाती है।

बिक्री, खरीद सब खतम। रुपये-पैसे की आमद को तरसती है आँखे।

मजदूरों के लिए और भी भयानक।

रातभर टपरियों में से पानी उलीचते रहो मोमजाना और लीपन को मिलाते-जोड़ते रहो। तब भी नहीं रुकता पानी। खेत और ताल, सब जगह जल ही जल। मानुस जान भी लें कि कहाँ है तालाब और कहाँ है खेत, बकरी नहीं जानतीं। मुर्गी नहीं समझ पाती। उनके लिए पानी-पानी एक-सा। जल ही जीवन जल ही मरण।"[3]

कल - कारखानों के निर्माण से बुंदेलखण्ड के प्रकृति का सौंदर्य नष्ट होता चला जा रहा है। पहाड़ खदेडकर पैसा निकाला जा रहा, जीवन में बदलाव आ रहा है- "पहाड़, वन, नदियाँ, महुआ, बेर, करौंदी, चिरौंदी, हल्दी, अदरक, अरे तमाम सम्पदा है। पर दुरभाग्य

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ. 170
2) वही पृ. 185
3) वही पृ. 274

है हमारा कि हम नहीं बरत पाते। दलोला के सपूर्द हो जाती है हमारी सम्पत्ति। पहड़ो की नीलामी वनों की बोली तहस-नहस कर देती है मनोरम वातावरण को। पहाड़ टूट रहे हैं, वन कट रहा हैं। सुनसान, सपाट मैदानों में फड़फड़ाने डोल रहे है पंछी-परेवा।''[1]

इसतरह मैत्रेयी पुष्पाने बुंदेलखण्ड अंचल में स्थित श्यामली और सोनपुरा गाँव के साथ-साथ विध्यांचल के पहाड़ी में बसे बामौर, डिकौली, उरई, खमा, गोंती, झखनवारा, झवरा, भलौटा, कुड़री, गोपालपुरा, सिकंदरापुरा, हमीरपुरा, ओरछा के जंगल की गढी, कंचना घाट, बीरगाँव सीवान सैदनगर, माधोपुरा आदि गाँवों का चित्रण करते हुए बेतवा और नर्मदा नदी के बीच पहाड़ी इलाकों में रहनेवाले बुंदेलखण्ड निवासियो का चित्रण किया है। जिनके जीवन का आधार प्राकृतिक सम्पदा थी। उसे ही विकास के नामपर नष्ट किया जाने लगा है; जिसके कारण गाँव के लोग और आदिवासी लोगों का जीवन संघर्ष से घीरा है।

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि प्रकृति के बदल ते परिवेश के साथ-साथ वहाँ के लोकजीवन में भी परिवर्तन आ जाता है। क्योंकि, उपन्यास में चित्रित परिवेश से वहाँ का मनुष्य जीवन विशिष्टता को लेकर प्रस्तुत होता है। यही कारण है आँचलिक उपन्यासों में अंचल और अंचल विशेष से निर्माण जन-जीवन का चित्रण करना ही उपन्यासकार का प्रमुख उद्देश्य रहता है।

निष्कर्ष :-

'इदन्नमम' उपन्यास की कथा जिस बुंदेलखण्ड से संबंधित है, वहाँ का भूभाग प्रकृति से लिपटा हुआ है। हरे-भरे जंगल, पर्वत-पहाड़ियों से भरे भूभाग गहन सन्नाटा लिए रहता है। अधूरा किला, गढ़ी, तीनों दिशाओं से बहती नदियाँ, दूर-दराज तक यातायात के साधनों का अभाव। कटैली रास्ते और उसके बीच संघर्षरत मानव जीवन उपन्यास को आँचलिक बना देता है। जिसमे प्रकृति परिवेश, सामाजिक परिवेश, भाषा परिवेश के कारण 'इदन्नमम' उपन्यास आँचलिक परिवेश का चित्रण सुंदरता से करते हुए लेखिका के 'इदन्नमम' उपन्यास में आँचलिक उपन्यास के तत्व दृष्ट्य है।

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ. 310

4.8) 'इदन्नमम' में मानवीय भूमिका :-

विश्व भर के मनुष्य का जीवनयापन विभिन्न है। हर देश, समाज, जाती एक संस्कृती, प्रकृति बनी है। इसी कारण मानव जीवन को परिभाषा बध्द करना सहज नहीं है। दुसरा कारण यह भी है कि मानवजीवन बदलता रहता है, बदलते परिप्रेक्ष्य में परिभाषाएँ भी बदल जाती है। फिर भी प्रत्येक मानव का अपना विशेष जीवन होता है। जिसे वह एक विशेष वातावरण में समन्वित होकर जीता है, उसे हम समाज कहते है। मानव समाज में रहते हुए अपने 'स्व' को दूर रखकर समाजिक भूमिकाएँ निभाता है। वह जिस प्रकार की भूमिका निभाता है उस पर उस समाज का विकास निर्भर रहता है। मानव का जीवन और उसके समाज जीवन की यथार्थ व्याख्या उपन्यास में अभिव्यक्त होती है। इसलिए उपन्यास साहित्य मानवजीवन के अत्यंत निकट का साहित्य माना जाता है। जिसमें मनुष्य और मनुष्य की समाज के प्रति भूमिका को सरल, स्पष्टता और यथार्थता से स्पष्ट किया जाता है। विजय शंकर मल्ल कहते है। ''बाह्य जीवन की आवश्यकताओं को समग्र रूप में चित्रित करनेवाला यह एक ऐसा साहित्य है, जो अपने पूर्व की कई साहित्य के परम्पराओं को आत्मसात करते हुए भी अभिनव आकर्षण के साथ प्रकट हुआ। उसने मनुष्य के क्रिया कलापों को चित्रित करते समय यह भी दिखलाया कि किसी चरित्र के जीवन में घटित होनेवाले कार्य-व्यापारों को रोचकता प्रदान करनेवाला यह जीवनोउद्देश्य है, जिसके लिये मानव जी रहा है।''[1] उपन्यास विधा में उपन्यासकार मानवजीवन का कोना-कोना झाँककर आ जाता है; जिसमें समाज निर्माण में मानव की भूमिका कितनी दृष्टव्य है यह भी वह स्पष्ट करता है। मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' के पात्रों के माध्यम से समाजनिर्माण में मानवीय भूमिका को सफलता से चित्रित किया है।

'इदन्नमम' की नायिका 'मंदा' उपन्यास में एक ऐसी भूमिका लेकर उभरती है, जो भ्रमित समाज को एक पथदर्शक के रूप में साध्य करती है। 'सोनपुरा' गाँव सरकार की ग्रामीण विकास परियोजना के कारण विस्थापित किये गाँव की यातना भूगत रहा है। 'न घर का न घाट का' रहा सोनपुरा गाँव के मनुष्य का जीवन संघर्ष की बेला में जी रहा है। उसे उभारने की नयी दृष्टी देने का काम मंदा करती है। ''कुछ गुनें, कुछ सोचें, कुछ विचारें, कुछ करें तब तो सार्थक

---

1) विजय शंकर मल्ल, आलोचना, राजकमल प्रकाशन, प्र.सं. अक्तूबर 1954, पृ. 64

है। बाँचना और सुनाना, वरन् अकारथ। तुलसीदास ने क्या गाने के लिए दी थीं। चौपाइयाँ, दोहे ? नहीं, ये तो उस विपत्तिकाल की कथा है। जब धरम की हानि हो रहीं थी। जब असुरों का साम्राज्य था और जब राम को मनुज वेश धरने के लिए बाध्य होना पड़ा था। अभिशप्त और त्रस्त्रों को उबारने के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम का आदर्श अपनाया था।''[1] यहाँ मंदा एक आदर्श मानवीय भूमिका में प्रस्तुत होती है, 'स्व' को त्यागकर व रामराज्य को साकार करना चाहती है। मानव के हक के लिए लड़ना चाहती है।

'इदन्नमम' में श्यामली गाँव के दादा (पंचमसिंह) मोदी लल्ला और चीफ साहब एकता के प्रतिक है। श्यामली गाँव में अनेक जाति, धर्म के लोग रहते है, परंतु उनको एकता की कड़ी में बाँधने का कार्य ये तीनों करते है। धर्म से बढ़कर मानव की महत्ता मानव समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण होती है। इसी भूमिका को निभाते हुए यह तीनों गाँव की एकता के लिए अंत तक लढ़ते रहते है। ''यहाँ की तो रीत-रसम ही अलग हैं। शहरों में कुछ भी होता रहे, अंगरेजी पढ़े लोग न मानें जाति-बिरादरी, पर अपने गाँव-पुरबों में ऐसी अनीत नहीं है अभी।''[2] मानव समाज में सहिष्णूता बनाये रखने में मानवीय भूमिका महत्वपूर्ण काम करती है। वहाँ मनुष्य को स्व, स्वजाती, धर्म को त्यागकर मानव कल्याण के लिए कार्य करना पड़ता है। श्यामली गाँव भी इसका प्रतिक है। ''चुनाव नहीं होने देते गाँव में। कहते है, 'आजादी के जज्ञ हमने अपनी आँखो देखा है। भइया, इस आजादी को सँजोकर सुरक्षित रखो, संभाले रहो। गुलामी बड़ी पीड़ाओं, कठिनाइयों के बाद कट पायी है।''[3] मानव समाज के कल्याण के लिए मानवता धर्म का अहंम् स्थान है, परंतु जब मनुष्य 'स्व' को महत्व देता है तब समाज बढ़कर अपने को बनाने के लिये उसके अंदर की पशु प्रवृत्ती जागृत हो जाने से मानव की विघातक प्रवृत्तीयाँ मानव समाज को खत्म भी कर देती है। 'इदन्नमम' में एक मानव से दूसरे मानव का शोषण भी दिखाई देता है। प्राचीन काल से आधुनिक काल तक मानव ने धीरे-धीरे प्रगती के इस लम्बे सफर में उसके जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहें। भारतीय समाज में आजादी के बाद बड़ी तेजी से बदलाव आता गया। गाँव की जो एक व्यवस्था थी वह टूट कर बिखर गयी। नागरी सुविधाओं, चकाचौंध

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण,2006. पृ.195

2) वही पृ. 33

3) वही पृ. 32

जिंदगी के आकर्षण ने मानवीय भूमिका में बदलाव आता गया। आज भौतिक सुख के पीछे पड़े मनुष्य में जाति-पाती, धर्म, भाई-भतीजा वाद बढता चला जा रहा है। गाँव की एकता खंडीत हो रही है। 'इदन्नमम' का खलनायक अभिलाख ऐषों-आराम की जिन्दगी जिने के लिए राऊत जाती के मजदूरों का खून चूस रहा है।-"वे कहने लगे- 'जुरा चढ़ाहै सो ? पइसा फँसा पड़ा है, उसके लिए क्या करें हम ? सोलिंग नहीं होगा तो मसीन में क्या पिसेगा? जगा जल्दी, एक ट्रक सोलिंग निकालेगा।"[1] आज के यंत्रयुग में मानव से बढ़कर यंत्र की महत्ता बड़ गई है यंत्र की गती से मानव को भागना पड़ रहा है। जिस दौंड में वह जिंदगी से दो हाथ करने लगा है। तो जीवन की निरर्थकता समझ आने पर दुसरों पर अन्याय अत्याचार करके ऐषो-आराम की जिंदगी जिनेवाला डबलबब्बा (लखनसिंह) बुढ़ापे में नोकर बनकर पंचमसिंह (दादा) के यहाँ रहता है। इसतरह अलग-अलग भूमिकाओं को निभाता मानव अपने समाज के निर्माण में अहंम् भूमिका निभाता है।

चौकट लांघने की मौहलत न पानेवाली भारतीय स्त्री आज अपने हक्क के लिये लड़ रही है। 'इदन्नमम' की कुसमा अपना अधिकार माँगती है, वह अपने पती यशपाल को पतीधर्म के बारे में कहते हए अपने अधिकार के लिए झगड़ती रहती दिखाई देती, "अगिन साच्छी करके ही आये थे तुम्हारे पूत के संग। सात भाँवरे फिर कें! लिहाज रखा उसने? निभाया सम्बन्ध?"[2] एक तरफ आज समाज मे मनुष्य अपने अधिकार की प्रति सजग होकर लड़ने के लिये तैयार दिखाई देता है; तो दुसरी तरफ 'स्व' के लिये समाज को मिटाने की प्रवृत्ती भी बढ रही है। ऐसे समय मे बदलते परिवेश के साथ-साथ मानवीय भूमिका में बदलाव लाना महत्वपूर्ण होता है 'इदन्नमम' (कोयले के महाराज) टीकमसिंह ऐसा ही पात्र है, जिसने समाज, गांव को जागृत करते हुए अपना हक पा लिया था, समाज को एकता का महत्व बता दिया था इस तरह मानव समाज में मानवीय भूमिका ही देश, जाती या घर-परिवार को बांधने मे साह्य करती है। जो 'इदन्नमम'की नायिका मंदा अपना जीवन समाज-गांव के लिये समर्पित करती है-

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ.229.
2) वही पृ. 146.

''ओ 3 म् भूर्भुव: स्व: अग्नि ऋषि पवमान: पांचजन्य

पुरोहित: नमीमहे महागयम् स्वाहा।

इदं अग्ने पवनाय इदन्नमम।''

अर्थात- ''यह मेरा नहीं। जो कुछ मैं अर्पण कर रहा हूँ यह मेरा नही।''[1]

डॉ. रागेय राघवजी ने कहा है- ''जीवन घटनाओं का चक्र है। निरन्तर चलनेवाला चक्र-अविराम-अकथित।''[2] जीवन घटनाओं का चक्र है, जिसमे मनुष्य अलग-अलग भूमिकाओं को निभाता है और जीवन चक्र के चलते-चलते मानव समाज-संस्कृती का निर्माण करता चला जाता है। जिससे उसके आनेवाली पिढ़ी को समाज-संस्कृती पथदर्शक के रुप में दिग्दर्शन करता रहता है। इसीलिए समाज में जीते समय मानव की भूमिका से मानव और समाज बनता-गढ़ता चला जाता है।

निष्कर्ष :-

'इदन्नमम' के मैत्रेयी पुष्पा ने मंदा, कुसुमा, टिकमसिंह, अभिलाख, जगेश्वेर आदि पात्रों के माध्यम से आज के भारतीय समाज का चित्रण प्रस्तुत करते हुए समाज निर्माण में मानवीय भूमिका महत्वपूर्ण स्थान रखती है, इस बात को स्पष्ट किया है।

4.9. 'इदन्नमम' की भाषा और शैली

समाज मे परिवर्तन लाना हो, क्रांती के बीज बोने हो तो जनसामान्य के साथ उसकी अपनी लोकभाषा में संवाद करे तो क्रांति की चिनगारी जल्दी सुलगती है; परिवर्तन की गती तेज होती है। लोकभाषा का महत्व बताते हुए राजेन्द्र रंजन कहते है- ''आज के सामाजिक तन्त्र के नियमन की बागडोर जिन के हाथ मे है ऐसे गिने-चुने विद्वानों, मनीषियों और उच्चवर्ग के लोगों से उनकी भाषा में आप के समाज की बात कहें तो यह भी ठिक है। इस का भी महत्व है, किन्तु मुख्य प्रश्न यह है कि वर्तमान भौतिक परिस्थितियों के कारण जिन के दिलों में सामाजिक परिवर्तन की चिनगारी सुलग रही है, उन से उनकी भाषाओं के महत्व से जुडा हुआ है।''[3] लोकभाषा का प्रयोग जिस साहित्य में होता हैं वह

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ.191.
2) शम्भूसिंह, 'रांगेयराघव और आंचलिक उपन्यास', सुशील प्रकाशन, अजमेर, प्र. सं. 1976, पृ. 58.
3) सम्पादक - सच्चिदानन्द वात्सायन, 'साहित्य और समाज परिवर्तन की प्रक्रिया', नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली. पृ. 164

साहित्य समाज के विकासभिमुखता का साधन बन जाता है। भारतेन्दु ने लोक भाषा का महत्व पहचानकर कहा था-

"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।"

निजभाषा समाज जागरण का माध्यम बन सकती है, इस बात को समझकर मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' उपन्यास में चित्रित बुंदेलखण्ड भूभाग के समाज की लोकभाषा 'बुंदेलखण्डी बोली' का प्रयोग करते हुये अचंल विशेष को व्यक्त करने के लिये बुंदेलखडी भाषा का सहज सुंदर प्रयोग किया है जिसमे 'इदन्नमम' की भाषा में बुंदेलखण्डी भाषा की महक, ध्वनियाँ, लोकोक्तियाँ, मुहाँवरे और लोकगीत प्रच्युर मात्रा मे मिलते है। लोकभाषा का प्रयोग करते हुए लेखिकाने बुंदेल प्रदेश के समाज जीवन का राग सहजता से आलापा है, जिससे पाठक स्थितप्रज्ञ होकर पढता चला जाता है। कथावस्तु को आगे बढाने के लिये एक मूल्यवान सर्जक तत्व के रुप में लेखिका ने बडी कुशलता से भाषा का प्रयोग किया है; जिसमें बुंदेलखंड़ी बोली के साथ-साथ ऊर्दू-अरबी, अंग्रेजी, ऊर्दू भाषा शब्दों का भी प्रयोग किया है।

4.9.1.1) बोलचाल की भाषा 'बुंदेलखंडी' के शब्द :-

लरका, खसम, खुसी, कित्ती बेराँ, लरका, पाल्टी, लहासें, लूहर, जुताई, बुवाई, कटाई, बेडिनी, सुभाय, बरनन, गिराम-समाज, ईसुर, अंसनपाटी, किसानी, पिरबंध, डरबाकें, भट्टी छोत, छिनार, लिड्ड्या, ककई, रेजगारी, लघुरियाऊ (आग लागाने वाली), गुड्याँ (दोस्त), रुगैलु (रोगी), कचुल्ला (कटोरा), रांटा (चरखा), हिरकाय (पास), पळ(छोंछक), राछरे (नाटक), चलाये (गौने), चेंच-करमेथा (चारे की पत्तियाँ), परिया (डालिया), सुदरका (पीली चिठ्ठी), भड़रे (जहाँ बागी होते है-भाँडेर), बराँटे (सपने), पिडवा (बंन्द करवाना), उमाना (नाप), घिची (गर्दन), भडिया (परि), पक्यात (सगाई), कचरा (काली चूडी)।

गालियाँ :-

नासिया, लूहर, कीरा पड़ेंगे, रंडी छोत, हरामजादी, बदफैल, सत्यानासी, महाहरामी, नासमिटा।

4.9.1.2) उर्दू– अरबी, फारसी– तुर्की शब्द :–

लिफाफा, बरमदा, कोशिश, सिरहन, लिहाज, जोखिम, फजहित, नाज, खामखाँ, मखौल, मोहला, बदमाश, औरत, मकान, कमीज, खानदान, कम्बल, अशरफियन, दस्तक, दीवार, फरज आदि।

4.9.1.3) अंग्रेजी शब्द :–

स्कूल, पॉलिश, गुडमॉर्निंग, सॉरी, फ्रॉक, डॉक्टर, क्रेशर, अस्पताल, बिल्डींग, क्लास, रिबन, ट्रेक्टर, सर्च लाईटए टैम, एक्सामिन, होटल, नोट, केंडिडेट, ज्वाईन, डीहाइड्रेशन, अनहाईजीनिक, केडिशन्स, डस्ट, हैल्थ, कमीसन, टाऊन-एरिया, चैममैन, पौडर-किरीम, बी.डी.ओ., बक्सा, ज्युनिअर हायस्कूल, इण्टर कॉलेज, सी.एम.ओ., जनरल, इन्फैक्शन, इजमस्ट, प्लास्टिक, हाइवे, कलक्टर, कमिश्नर, टू-इन-वन, टेपरिकार्डर, सप्लाई, कैसेट, रेडिओ, ब्लास्टिंग, एम.डी., मेडीसन, सुपरिटेंडेट, ट्रांसफर, मैडिल, नम्बर, नॉर्मल, टिटनेस, इंजन, नर्स, हैंडसम, सिस्टर, कम्पाऊंडर आदी।

4.9.1.4) विकृत शब्द :–

टिटनेस, चैरमैन, लोटिस, कलास, सार्रिन, आदी।

इस तरह मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' में बुंदेलखंडी भाषा के साथ-साथ अँचल परिवेश की एकात्मता को सफल बनाते हुये बुंदेल अँचल के हिंदु-मुस्लिम एकता, पहाडी जन जातियों के जीवन को प्रस्तुत करने के लिये बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हुये भाषिक संरचना में सफलता प्राप्त को है। शिक्षित पात्रों को परिनिष्ठित भाषा में प्रस्तुत करते हुये कथावस्तु की उद्देश्य सफलता के लिये भाषा स्वरुप का सफल संयोजन लेखिका के भाषा संबंधी ज्ञान का ही द्योतक है, जिससे 'इदन्नमम' की कथावस्तू बुंदेलखंडी लोकभाषा में प्रस्तुत होते हुये अँचल विशेषता को उजागर कर देने में सफल बनी है।

4.9.2) संवादो में प्रयुक्त भाषा :–

आज के नये उपन्यासों के रचना प्रक्रिया में उपन्यासकार परम्परागत और आधुनिक जीवन संघर्ष का चित्रण करने के लिये एक मूल्यवान तत्व के रुप में भाषातत्व का प्रयोग सशक्त माध्यम के रुप में कर रहा है। परिणाम स्वरुप: आज के उपन्यासों में भाषा के कई रुप एक साथ चलते एक ही रचना में प्राप्त होते है। 'इदन्नमम' में मैत्रेयी पुष्पा ने भाषा के कई प्रयोग एक साथ निम्न प्रकार से किये है-

4.9.2.1) बोलचाल की भाषा :-

'इदन्नमम' में स्थानीय बोली बुंदेलखंडी का प्रच्युरमात्रा में प्रयोग हुआ है। जिससे स्थानीय रंगत को प्रगाढ़ बनाने में भाषा साधन के रुप में उपयोगी बनी सिध्द होती है। उपन्यास की पात्र बहु, दादा पंचमसिंह के संवाद बुंदेलखंडी बोली भाषा के श्रेष्ठ उदहारण है-

बहु मंदा से कहती है, - ''ना बेटा, तुम्हारे पीछे, पड़े रहते थे हम, कि इन जटा-जूट हो पाये बारों में ककई फेंर लो। पर कहाँ ...... अब देख लो कि दिन में तीन बेर ओंछती हो। बार सम्भारे पीछें कितेक लम्बी चुरिया लगती है तुम्हारी। कहते हैं न कि बार-सिंगार, बार-जंजार।''[1]

बहु दादा पंचमसिंह को अपने बेटे महेंदर की कत्ल का कारण बोलचार के शब्दों मे बताती है-''अभिलाख यार दोस्त ही तो थें महेंदर के, पर नहीं देखी गई महेंदर की बड़ी-बड़ा। .... विरोधी पाल्टी में जा मिले। विराने गाँव के होके इत्तके इखी भाव।''[2]

दादा पंचमसिंह के यहाँ पनाहपाने आई बहु को देखकर वहाँ मौजूद ग्रामीण औरतों की प्रतिक्रियाँ बोलचाल की भाषा का श्रेष्ठ उदाहरण है-''देखो तों मोंडी हिरस उठी। कैसी कठकरेज मतारी हती कि छोड गई पुतरिया-सी बेटी को। चोरइया-परेब तक नहीं छोड़ते अपने अंडी-बच्चा।''[3] पहाड़ी पर काम करनेवाले आदिवासी राऊत जाती के लोगो की बोलचाल की भाषा का चित्रण यहाँ दृष्टव्य है- ''लो जिज्जी, हम तो बेध्यानी में जे समेत भूल गये, कि आय खखोले जा रहे है कनस्तरी।''[4]

मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम्' बोलचाल की भाषा- बुंदेलखंडी भाषा का गाँव के लोगों के संवादों में प्रयुक्त करते हुए 'इदन्नमम' के बुंदेलखंड आंचलिक परिवेश को जीवंतता प्रदान की है।

4.9.3) शुध्द साहित्यिक परिनिष्ठित भाषा :-

'इदन्नमम' में पढे-लिखे पात्रों के संवादों में परिनिष्ठित भाषा का प्रयोग किया है। उपन्यास का प्रमुख पात्र मकरंद पढ़ा लिखा है, जो परिनिष्ठित भाषा का प्रयोग करता है-

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण,2006. पृ.49.
2) वही पृ. 67.
3) वही पृ. 14.
4) वही पृ. 227.

''तुम्हे भी कितनी शिकायते होगी मुझसे। लेकिन मुझे कोई शिकायत नहीं है मन्दा तुमसे। तुम्हारा ही सपना था कि मैं डॉक्टर बनुँ। यों जो अम्मा -पापा को भी बहुत गर्व है कि उनका बेटा डॉक्टर हो गया।''[1] यहाँ मकरंद के द्वारा मंदा को लिखे गये पत्रों मे परिनिष्ठित भाषा का प्रयोग जगह-जगह पर उपन्यास में प्राप्त होता है।

महाराज (टिंकमसिंह) मंदा को संकटकाल की कहानी सुनाते हुये परिनिष्ठित भाषा का प्रयोग हुआ है-''महापर्व ही था बिटिया, किसी के लिये विकास का महापर्व? तो किसी के लिए विनाश का महापर्व। परिछा खुर्द- जसौरा-खड़ेसर के विकास का महापर्व! जहाँ के निवासियों को अपनी भूमि से उखाड़ा जा रहा था। बेदखल किया जा रहा था। खदेड़ा जा रहा था।''[2]

4.9.4) चित्रात्मक भाषा :-

'चित्रात्मक भाषा' आंचलिक भाषा तत्व का प्राण है। चित्रात्मक भाषा के माध्यम से ही लेखक अँचल परिवेश का सजीव चित्रण करते हुये पाठको को अँचल प्रदेश से परिचित करवाता है। अँचल विशेष से आकर्षित करता है।

ओरला के जंगल की गढी में जब मंदाकिनी को छिपाया गया, वहाँ के घन जंगल चित्रण बुंदेलखंड के प्रकृति संपदा से परिचित करता है।

''सूरज ढल रहा है।

घनेरे वनों में सुनहरा किरणों की लाल चमक

करधई और कैर की फुनगियों को रंग ही है।

रोशनी पलाश, सेमल और कदम्ब के फुलों में भटक रही है।

और भटक रही है मन्दाकिनी।

बबुल और सागौन की छतनार छाया में अंधो ही अंधोरा।

चारों और कँटीली झाडियाँ ही झाडियाँ।

मन्दाकिनी गढी की कँगूरे दार छते पर खडी थरथरा रही है। आसपास फैले निर्जन एकान्त में जंगली फंछियों की कर्ण भेदी चिचियाहट..... मनोरम गंध से भी भय लग रहा

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ. 220.

2) वही पृ.188.

है। कहीं करौंदी में कोई प्रेत तो नहीं बसता? बहु कहती हैं, खसबोई पर रीझ जाते हैं भूत-प्रेत। हवा के तेज झोकों में कोई चुड़ैल उड़ा रही हो सुगंध।''[1]

'इदन्नमम' बऊ द्वारा पुत्र महेंदर की हत्या का वर्णन भी चित्रात्मक भाषा में प्रस्तुत हुआ है- उस दिन अस्पताल का उद्घाटन था। गाँव में नई हवा चलने लगी थी। अस्पताल को घेरकर एक सफेद तंबू लगाया था। मंतरीजी उद्घाटन के लिए आनेवाले थे। महेंदर ने लोगों को अस्पताल की आवश्यकता बताई। उद्घाटन के दिन भीड़ हुई थी। अचानक मार-पीट शुरु हुई। ''भागम-भाग मचने लगी। उसी समय महेंदर के सिर पर किसी ने डंडा मारा। महेंदर बेहोश होकर गिर गया। भीड़ में कुचलकर दो बच्चे मरे, अन्त मे महेंदर को गोली मारी, तोता की तरह उड़ गये उसके प्राण, अस्पताल अनाथ हुआ। सब मोह-माया छोड चला मेरा महेंदर।''[2]

इस उपन्यास में खलनायक पात्र अभिलाख के अन्याय के प्रति विद्रोह करनेवाले राऊत आदिवासियों के बीच के संघर्ष का वर्णन चित्रात्मक शैली में प्रस्तुत हुआ है- ''वाक्य पुरा नहीं हो पाया तूफान उमड़कर किवाडों तक आ पहुँचा। छत और दीवार पर चढ़ गये राऊत। अभिलाख की आँखे फरी रह गयी। ''बाहर से चिखने-चिल्लाने की आवाजें-'' लागो पथरा। घालो डीला। मारो घना, चलाओ गेंती। कतल कर दो हरामी का। फरुआ चलाओ रे........!''

''खडाक्; खडक; खडाक; कमरे की किवाडे कच्ची लकडी की टम्पेररी। खिचिक-खिचिक टूट गयी। चौखर चरमराकर गिरनेवाली थी।''

''लिला चूडी और पायल बाजाती झन्न-झन्न अभिलाख के पास जा पहुँची। छाती से लग गयी।

''लो किवाडें टूट गयीं। चौंक पडी लीला। डर के मारे घिग्घी बँध गयी उसकी।''[3]

इस उपन्यास में बीहड़ जंगल मे बहु और मंदा का रहना, वहाँ कुसुमा और दाऊजू का मीलन, इस जंगल से मंदा का डरना, कैलाश मास्टर का मंदा पर बलात्कार करना, दादा

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006. पृ. 56.

2) वही पृ. 26.

3) सुरेन्द प्रताप यादव, 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी ग्रामीण उपन्यासों में ग्रामीण यथार्थ और समाजवादी चेतना,' भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1992, पृ. 135

पंचमसिंह का अनशन करना, महाराज टिकमसिंह द्वारा संकटकाल की कहानी सुनाना, मंदा और माँ (प्रेम) का मिलना, मंदा द्वारा मजदूरों को शिक्षा-प्रसार का कार्य, भाजप की रथयात्रा के परिणाम स्वरुप श्यामली गांव में दंगे-फसाद का कुसमा द्वारा वर्णन करना ये सारी घटनायें चित्रात्मक भाषा शैली के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए मैत्रेयी पुष्पा ने बुंदेलखंड के आंचलिक परिवेश, अंचल प्रदेश की विशेषताओं से परिचित करा दिया है।

4.9.5) लोकगीतात्मक भाषा एवं काव्यत्मक भाषा :-

लोकगीतात्मक एवं काव्यात्मक भाषा आँचलिक उपन्यासों में अँचल विशेष की संस्कृती, इतिहास बताने में सहाय्य करती हुई, अँचल विशेष का परिवेश पाठक के सामने प्रस्तुत करता है। सुरेन्दप्रसाद यादव ने लोकगीतों के सदंर्भ मे लिखा है "लोकगीतों में लोकजीवन स्पंदित होता है। उसका समूचा अंत वैभव इन गीतों के रुप में प्रस्फुरीत होता है। परम्परा के रुप में गाए जानेवाले ये गीत जिनके रचयिताओं का कोई उल्लेख नहीं है, कभी-कभी इनके गायकों के व्यक्तित्व के साथ घुल-मिलकर एकमेव हो जाते है।"[1] लोकगीतों के माध्यम से श्रोता-पाठक अँचल विशेष की संस्कृती से परिचित हो जाते है। 'इदन्नमम' में भी मैत्रीयी पुष्पा ने जगह-जगह लोकगीतों का प्रयोग करते हुये उपन्यास में काव्यात्मक भाषा शैली का प्रयोग किया है।

श्यामली गाँव के जातीय एकात्मता को स्पष्ट करते समय लेखिका ने ठाकूर पंचमसिंह के यहाँ चलनेवाले 'भजन का चित्रण प्रस्तुत किया है। ठाकूर पंचमसिंह के यहाँ रामकिशन कुम्हार गीत गाता है-

"विंध्या प्रदेश जिला टिकमगढ़,

नगर ओछा ग्राम

कि जहाँ पर राजे ऽऽ सिह्री भगवाऽऽन।"[2]

बुंदेलखंड की भूमी श्रीराम के पदस्पर्श से पावन बनी है; जो नित्य पूजा पाठ में 'रामायण' का बाचन होता है।

मंदा रामायण को दोहों का गान करती दिखाई देती है-

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम्' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006, पृ. 34.

2) वही पृ. 55.

"बाँधा सेतु नील-नल सागर।

राम-कृपा जसु भयइ उजागर,

बंधि सेतु अति सदृढ बतावा।

देखि कृपानिधी के मन भावा।"[1]

बुंदेलखंड के लोग सुख-दुःख में मन को उभार पाने के लिये ईश्वर साधना के साथ-साथ 'रामायण' का पठन करते है।

कुसुमा भाभी और दाऊजू का एक-दूसरे के प्रति समर्पित होना लेखिकाने 'रामायण' के दोहों के माध्यम सें चित्रित किया है।

"चलो सजनी राम आ गये बगीचा,

जब से परी राम की छइँयाँ।"[2]

मंदा की सगाई के रस्म के पहले औरते पक्षी गीत गाती है-

"छोटी सी बनरी के लम्बे-लम्बे केस,

सो खेले बुलबुल दरबार भले जू,

कै तुम बेटी मेरी साँचे में ढारी,

कै गढ़ सकल सुनार भले जू।"

बहु भी स्वयं भीत गाती है-

"चार कहार जब खेपी रे पालकी,

बिटिया ने सुदन मचाये मोरे लाल।"[3]

गाते-गाते बहु का गला भर आ जाता है। आँखे नम हो जाती है। सब लडकियाँ लल्ला की बावड़ी पर आती हैं, पूजा करती है, गनेस, तुलसी और गौरा पार्वती के भजन गाती है।

इस तरह मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' में लोकगीतों का प्रयोग करते हुए बुंदेलखंड अँचल का वर्णन, वहाँ की संस्कृती, मानसिकता का परिचय करा दिया है।

---

1) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम्' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2006, पृ. 82.

2) वही पृ. 108.

3) वही पृ. 108.

4.9.6 मुहावरें, कहावतों और सुक्तियों का प्रयोग – 'इदन्नमम' में जगह-जगह पर लेखिकाने मुहावरे और कहावतों का प्रयोग करते हुये अँचल विशेष की भाषा 'बुंदेलखंडी' भाषा का परिचय करा देने के साथ-साथ वहाँ के आचार-विचार भी स्पष्ट किये है। मूल शब्द जब अलग ढंग से लाक्षणिक भाषा में प्रचलित होकर प्रयोग में लाया जाये तो वह प्रभाव पूर्ण होता है। जिसमें व्यक्त होनेवाला संकेत अर्थ महत्वपूर्ण होता है। भाषा में शब्द को महत्वपूर्ण या मौल्यवान बनाने के लिये, मुहावरें और कहावतों का प्रयोग किया जाता है जिससे भाषा प्रभावशाली और रोचक बन जाती है। 'इदन्नमम' में निम्न मुहावरें और कहावतों का प्रयोग हुआ है।

मुहावरें :–

'परते' उखाड़ी जाना, 'जीभ को लगाम लगाना, दांतो तले ऊँगली दबाना', 'जंगल में मंगल होना', 'राहत की साँस लेना', 'आपे से बाहर होना','खार खा जाना', 'साँस जलने लगना', 'त्यौरियाँ चढ़ जाना', 'ठहरे हुए जल में पत्थर मारना', 'अकल पर तरस खाना', 'मुँह में राम बगल में ईंट', 'मीन-मेख निकालना', 'हाँ मे हाँ मिलाना', 'घिग्मी बँक जाना', 'नाक में दम करना'।

4.6 कहावते :–

''मै डार डार तू पात-पात,' 'परदेशी की प्रीत', 'रैन का सपना;' 'दिया कलेजा काट हुआ नहीं अपना', 'विनाश काले विपरीत बुध्दि', 'दूध के जले छाछ को फुँक-फुँक कर पीना', 'मुल्ला की दौड मस्जिद तक', 'साँप निकले पीछे लकीर पीटने आये हैं।' 'कौआ चले हंस की चाल', 'रहें भिसौरों में और सिंहलद्वीप के सपने देखे', 'न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी,' 'सीधी ऊँगली घी नहीं निकलता', 'साँप भी मर जाये और लाठी भी नहीं टूटे', 'मियाँ-बीवी राजी तो क्या करेगा काजी', 'बार-सिंगार, बार-जंजार' 'कानी के ब्याँह कों सौ जोखे।'

सुक्तियाँ :–

'जोगी को ब्याह गये ते बैरागिन होना ही पडेगा, 'साँचा नाता तो प्यास और पानी का', 'मौत से बडा कोई तप नहीं', 'पर उपदेश, कुसल बहुतेरे', 'अपने खुन से लडना कितना दुसवास होता है,' 'पराधीन सपने हुँ सुख नही', 'जनता से भारी होता है राजतंत्र',

'बिना पइसा सब सून', ''आदमी बिखरता है, तो माया के मद में या सुख की अति में,' 'पराये फटे में टाँग अडाने चले', 'नीम चढा करेला निकला यह घर', 'एक तो खुँटे बांधा पांगुर, 'दूसरा सरग में उडता पंछी', 'मोहलत में मिली घडी बहुत छोटी होती है', समष्टिगत प्रेम मानव को दुखों के गर्त से बाहर खींचता है।, सुनार अपने माँ का मीत नही होता। इन मुहावरों कहावतो और सुक्तियों के कारण 'इदन्नमम' उपन्यास भाषा-शैली की दृष्टि से सफल बना है। 'इदन्नमम' की भाषा शैली के संबंध में विजय बहादुर सिंह कहते है - ''उपन्यास में जिस विंध्य अंचल का लोकजीवन चित्रित किया गया है, वह आम बोलचाल की खड़ी बोती में न होकर बुंदेली बोली की महक से सराबोर है। हम जानते हैं कि मैत्रेयी ने उपन्यास की भाषा के संदर्भ में प्रेमचंद का अनुसरण नहीं किया है, पर जैनेद्र, अज्ञेय, अमृतलाल नागर आदि का भी नहीं। निर्मल वर्मा जैसे सुपर कलाकारों का तो एकदम ही नहीं, जहाँ पहुँच भाषा और संगीत शास्त्रीय घरानों के असाधारण कलाकारों के अनोखे आलाप बन जाते हैं। मैत्रेयी न इसके विपरीत उरई, कालपी, एटा, झाँसी आदि के आसपास की बुंदेली को अपने लिए चुना है और लगभग वैसा ही काम किया है जैसा 'मैला आँचल' या 'परती परिकथा' में रेणु ने उस 'अँचल' की बोली के संदर्भ में। पर इसके साथ यह कहना जरुरी लग रहा है कि रेणु बोली के हुनर को एक कलाकार की तरह साधते और संभालते हैं, जबकि मैत्रेयी का संबंध यथार्थ जीवन को भरोसेमंद बनाने वाली उस जुबान से है, जिसे वे कभी बेहद नाजुकी से तो कमी बेहद नाजुकी से तो कभी बेहद ठेठपन से पूर्ती हैं।''[1] इस तरह मैत्रेयी पुष्पा की भाषा उस कोकीला का राग है जिसे वसंत के आगमन की सुचना नही देनी पड़ती बल्कि वह अपने राग से वसंत के आगमन की सूचना देती है, इस तरह मैत्रेयी ने 'इदन्नमम' में अपनी भूमी बुंदेलखण्ड को वाणी के बदलते प्रवाह के साथ स्वरमय किया है। राग वही बुंदेलखण्ड बोली जिससे बुंदेलखण्ड की लोकगाथा 'इदन्नमम' 'रामायण' की तरह एक आख्यान बनकर रह जाएगी जिसे पढ़ने की इच्छा पाठक के मन में हमेशा ताजा रहेगी।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत अध्याय में 'इदन्नमम' की भाषा शैली संबंधी चर्चा की। 'इदन्नमम्' में पात्रानुकूल बोलचाल की भाषा का अच्छा प्रयोग करते हुये लेखिकाने सम्बधित उपन्यास के

परिवेश और पात्रों के चरित्र को जिन्दा बना दिया है। अँचल विशेष की भाषा 'बुंदेलखंडी' का प्रयोग अँचल के पात्रों के संवादों में रखकर पात्रों के चरित्र विशेषता को स्पष्ट करते हुए परिवेश वातावरण निर्मिती में बोलीभाषा ने जान ड़ाल दी है। 'इदन्नमम्' मे चित्रात्मक का वर्णन करते हुये बुंदेलखंड अँचल के प्रकृति वर्णन के माध्यम से साक्षात 'बुंदेलखंड' अँचल आँखो के सामने खड़ा कर दिया है। लोकगीतो के माध्यम से अँचल का इतिहास, संस्कृति, धर्म, वहाँ की प्रवृत्तियों को प्रस्तुत किया है। साथही आलोच्य उपन्यास में उर्दू-अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग हुआ है। पढ़े - लिखे पात्रों के संवादो में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करते है। जगह-जगह पर मुहाँवरे, कहावते, सुक्तियों का प्रयोग करते हुये लेखिकाने भाषा-सौष्ठव को बढ़ाया है। जिससे उपन्यास की भाषा सशक्त बनी है। इस तरह 'इदन्नमम' में मैत्रेयी पुष्पा ने भाषा-शिल्प में लक्षणीय, चित्रात्मक, वर्णनात्मकता का प्रयोग करते हुये उपन्यास को भाषा की दृष्टी से उँचा और परिष्कृत बना दिया है। सहज -सरल बुंदेलखण्डी भाषा प्रयोग के कारण चारित्रिक विशेषताएँ उजागर हो उठी है। रामचरित्रमानस पठन में 'अवधी' बोली का प्रयोग भारतियों की धार्मिकता को स्पष्ट करते हुए हर एक भाषा को अपनाने की वृत्ती दिखलाता है, साथ ही अँग्रेजी बोलियों का जगह-जगह प्रयोग बदलते ग्रामीण बोली पर प्रकाश ड़ालता है और पढ़े-लिखे पात्रों की शिक्षित भाषा से पात्र जीवित हो उठे है। इस तरह अपने 'भूमी' की गाथा ठेठपन से कहने के लिए 'बुंदेलखण्डी' बोली का प्रयोग करते हुए मैत्रेयी पुष्पाने अपने 'अँचल' विशेष की भाषा समृध्दी को पाठकों के समक्ष सफलता से रखा है।